अध्याय ११

हरिदास ठाकुर का महाप्रयाण

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में इस अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। इस अध्याय में यह वर्णन किया गया है कि ब्रह्मा हरिदास ठाकुर ने श्री चैतन्य महाप्रभु की सहमति से कैसे अपना शरीर त्याग दिया और स्वयं महाप्रभु ने कैसे उनकी अन्त्येष्टि क्रिया की तथा उनके शरीर को समुद्र तक ले गये। उन्होंने शरीर को गड्ढे में रखा, उसे बालू से ढका और उस स्थान पर एक चबूतरा बना दिया। समुद्र स्नान करने के बाद उन्होंने दूकानदारों से जगन्नाथ जी का प्रसाद माँगा और वहाँ पर एकत्रित भक्तों को प्रसाद बाँटा।

नमामि हरिदासं तं चैतन्यं तं च तत्प्रभुम् ।
संस्थितामपि यन्मूर्तिं स्वाङ्के कृत्वा ननर्त यः ॥१॥

नमामि हरिदासं तं चैतन्यं तं च तत्प्रभुम् ।
संस्थितामपि यन्मूर्तिं स्वाङ्के कृत्वा ननर्त यः ॥ १ ॥

नमामि—मैं नमस्कार करता हूँ; **हरिदासम्**—हरिदास ठाकुर को; **तम्**—वे; **चैतन्यम्**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **तम्**—वे; **च**—साथ ही; **तत्-प्रभुम्**—उनके प्रभु; **संस्थिताम्**—मृत; **अपि**—अवश्य; **यत्**—जिनका; **मूर्तिम्**—देह; **स्व-अङ्के**—उनकी गोद में; **कृत्वा**—रखकर; **ननर्त**—नृत्य किया; **यः**—वे जो।

अनुवाद

मैं हरिदास ठाकुर तथा उनके स्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु को सादर नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने हरिदास ठाकुर के शरीर को अपनी गोद में लेकर नृत्य किया।

জয় জয় শ্রী-চৈতন্য জয় দয়াময় ।
জয়াদ্বৈত-প্রিয় নিত্যানন্দ-প্রিয় জয় ॥২॥

জয় জয় শ্রী-চৈতন্য জয় দয়াময় ।
জয়াদ্বৈত-প্রিয় নিত্যানন্দ-প্রিয় জয় ॥ ২॥

জয় জয়—জয় হো; **শ্রী-চৈতন্য**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু; **জয়**—জয় হো; **দয়া-ময়**—সবসে কৃপালু; **জয়**—জয় হো; **অদ্বৈত-প্রিয়**—অদ্বৈত আচার্য কে প্রিয় প্রভু; **নিত্যানন্দ-প্রিয়**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু জো শ্রী নিত্যানন্দ প্রভু কে প্রিয় হৈঁ; **জয়**—জয় হো।

অনুবাদ

শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু কী জয় হো, জো অত্যন্ত দয়ালু হৈঁ ঔর জো অদ্বৈত আচার্য তথা নিত্যানন্দ প্রভু কো অত্যন্ত প্রিয় হৈঁ।

জয় শ্রীনিবাসেশ্বর হরিদাস-নাথ ।
জয় গদাধর-প্রিয় স্বরূপ-প্রাণ-নাথ ॥৩॥

জয় শ্রীনিবাসেশ্বর হরিদাস-নাথ ।
জয় গদাধর-প্রিয় স্বরূপ-প্রাণ-নাথ ॥ ৩॥

জয়—জয় হো; **শ্রীনিবাস-ঈশ্বর**—শ্রীনিবাস (শ্রীবাস ঠাকুর) কে প্রভু কী; **হরিদাস-নাথ**—হরিদাস ঠাকুর কে প্রভু; **জয়**—জয় হো; **গদাধর-প্রিয়**—গদাধর কে প্রিয় প্রভু কী; **স্বরূপ-প্রাণ-নাথ**—স্বরূপ দামোদর কে প্রাণনাথ কী।

অনুবাদ

শ্রীনিবাস ঠাকুর কে প্রভু কী জয় হো! হরিদাস ঠাকুর কে স্বামী কী জয় হো! গদাধর পণ্ডিত কে প্রিয় স্বামী কী জয় হো! স্বরূপ দামোদর কে প্রাণনাথ কী জয় হো!

জয় কাশী-প্রিয় জগদানন্দ-প্রাণেশ্বর ।
জয় রূপ-সনাতন-রঘুনাথেশ্বর ॥৪॥

জয় কাশী-প্রিয় জগদানন্দ-প্রাণেশ্বর ।
জয় রূপ-সনাতন-রঘুনাথেশ্বর ॥ ৪॥

জয়—জয় হো; **কাশী-প্রিয়**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু জো কাশী মিশ্র কে অতি প্রিয় হৈঁ;

जगदानन्द-प्राण-ईश्वर—जगदानन्द पण्डित के प्राणप्रिय प्रभु; **जय**—जय हो; **रूप-सनातन-रघुनाथ-ईश्वर**—रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी एवं रघुनाथ दास गोस्वामी के प्रभु।

अनुवाद

काशी मिश्र के परम प्रिय श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! वे जगदानन्द के प्राणनाथ हैं और रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी तथा रघुनाथ दास गोस्वामी के प्रभु हैं।

जय गौर-देह कृष्ण स्वयं भगवान् ।
कृपा करि' देह' प्रभु, निज-पद-दान ॥५॥

जय गौर-देह कृष्ण स्वयं भगवान् ।
कृपा करि' देह' प्रभु, निज-पद-दान ॥५॥

जय—जय हो; **गौर-देह**—श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य देह की; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **स्वयम्**—स्वयं; **भगवान्**—परमेश्वर; **कृपा करि'**—कृपा करें; **देह'**—कृपया प्रदान करें; **प्रभु**—हे प्रभु; **निज-पद-दान**—चरणकमलों में शरण।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य स्वरूप की जय हो, जो स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण हैं! हे प्रिय प्रभु, आप अपनी अहैतुकी कृपा द्वारा मुझे अपने चरणकमलों में शरण दीजिये।

जय नित्यानन्द-चन्द्र जय चैतन्येर प्राण ।
तोमार चरणारविन्दे भक्ति देह' दान ॥६॥

जय नित्यानन्द-चन्द्र जय चैतन्येर प्राण ।
तोमार चरणारविन्दे भक्ति देह' दान ॥६॥

जय—जय हो; **नित्यानन्द-चन्द्र**—नित्यानन्द प्रभु की; **जय**—जय हो; **चैतन्येर प्राण**—श्री चैतन्य महाप्रभु का जीवन और प्राण; **तोमार चरण-अरविन्दे**—आपके चरणकमल में; **भक्ति**—भक्ति; **देह'**—कृपया प्रदान करें; **दान**—दान।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के प्राणाधार श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! हे प्रभु, आप मुझे अपने चरणकमलों की भक्ति में लगा लें।

जय जयाद्वैत-चन्द्र चैतन्येर आर्य ।
स्व-चरणे भक्ति देह' जयाद्वैताचार्य ॥७॥

जय जयाद्वैत-चन्द्र चैतन्येर आर्य्य ।
स्व-चरणे भक्ति देह' जयाद्वैताचार्य्य ॥७॥

जय जय—जय जय; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की; **चैतन्येर आर्य्य**—प्रभु के सम्मान के पात्र; **स्व-चरणे**—आपके चरणकमलों में; **भक्ति देह'**—कृपया मुझे भक्ति प्रदान करें; **जय**—जय हो; **अद्वैत-आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य की।

अनुवाद

उन अद्वैत आचार्य की जय हो, जिन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु उनकी आयु तथा आदरशीलता के कारण श्रेष्ठ मानते हैं। कृपया मुझे अपने चरणकमलों की भक्ति में लगाएँ।

जय गौर-भक्त-गण,—गौर याँर प्राण ।
सब भक्त मिलि' मोरे भक्ति देह' दान ॥८॥

जय गौर-भक्त-गण,—गौर य्याँर प्राण ।
सब भक्त मिलि' मोरे भक्ति देह' दान ॥८॥

जय—जय हो; **गौर-भक्त-गण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों की; **गौर**—श्री चैतन्य; **य्याँर**—जिनके; **प्राण**—जीवन और प्राण; **सब**—सब; **भक्त**—भक्त; **मिलि'**—मिलकर; **मोरे**—मुझे; **भक्ति**—भक्ति; **देह' दान**—कृपया प्रदान करें।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्तों की जय हो, क्योंकि महाप्रभु उनके जीवन और प्राण हैं। कृपया आप सभी मुझे भक्ति का दान दें।

जय रूप, सनातन, जीव, रघुनाथ ।
रघुनाथ, गोपाल,—छय मोर नाथ ॥९॥

जय रूप, सनातन, जीव, रघुनाथ ।
रघुनाथ, गोपाल,—छय मोर नाथ ॥९॥

जय—जय हो; **रूप**—रूप गोस्वामी; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **जीव**—जीव

गोस्वामी; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **रघुनाथ**—रघुनाथ भट्ट गोस्वामी; **गोपाल**—गोपाल भट्ट गोस्वामी; **छय**—छः; **मोर**—मेरे; **नाथ**—प्रभु।

अनुवाद

रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी, जीव गोस्वामी, रघुनाथ दास गोस्वामी, रघुनाथ भट्ट गोस्वामी तथा गोपाल भट्ट गोस्वामी—वृन्दावन के इन छः गोस्वामियों की जय हो। ये सब मेरे स्वामी हैं।

এ-সব প্রসাদে লিখি চৈতন্য-লীলা-গুণ ।
যৈছে তৈছে লিখি, করি আপন পাবন ॥১০॥

এ-সব প্রসাদে লিখি চৈতন্য-লীলা-গুণ ।
য়ৈছে তৈছে লিখি, করি আপন পাবন ॥ ১০॥

এ-সব—इन सब की; **प्रसादे**—कृपा से; **लिखि**—मैं लिख रहा हूँ; **चैतन्य-लीला गुण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के गुण एवं लीला; **य्रैछे तैछे**—किसी तरह; **लिखि**—मैं लिख रहा हूँ; **करि**—कर रहा हूँ; **आपन पावन**—स्वयं को पवित्र।

अनुवाद

मैं महाप्रभु की लीलाओं तथा गुणों की यह कथा श्री चैतन्य महाप्रभु एवं उनके भक्तों की कृपा से लिख रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि किस तरह उचित रीति से लिखूँ, किन्तु इस वर्णन को लिखकर मैं अपने आपको शुद्ध कर रहा हूँ।

এই-মত মহাপ্রভুর নীলাচলে বাস ।
সঙ্গে ভক্ত-গণ লঞা কীর্তন-বিলাস ॥১১॥

এই-মত মহাপ্রভুর নীলাচলে বাস ।
সঙ্গে ভক্ত-গণ লঞা কীর্তন-বিলাস ॥ ১১॥

এइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नीलाचले वास**—जगन्नाथ पुरी में निवास; **सङ्गे**—के साथ; **भक्त-गण लञा**—उनके भक्तों को लेकर; **कीर्तन-विलास**—हरिनाम संकीर्तन का आनन्द उठाते।

अनुवाद

इस प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु अपने निजी भक्तों के साथ जगन्नाथपुरी में रहे और उन्होंने हरे कृष्ण महामन्त्र के संकीर्तन का आनन्द लिया।

दिने नृत्य-कीर्तन, ईश्वर-दरशन ।
रात्र्ये राय-स्वरूप-सने रस-आस्वादन ॥ १२॥

दिने नृत्य-कीर्तन, ईश्वर-दरशन ।
रात्रे राय-स्वरूप-सने रस-आस्वादन ॥ १२॥

दिने—दिन में; **नृत्य-कीर्तन**—नृत्य करते और कीर्तन करते; **ईश्वर दरशन**—जगन्नाथ भगवान् के मन्दिर में जाकर; **रात्रे**—रात्रि में; **राय**—रामानन्द राय; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **सने**—के साथ; **रस-आस्वादन**—आनन्दमय रस आस्वादन करते।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु दिन में नृत्य, कीर्तन तथा जगन्नाथ मन्दिर का दर्शन करने में लगे रहते। रात में वे अपने अत्यन्त विश्वस्त भक्तों, यथा रामानन्द राय तथा स्वरूप दामोदर गोस्वामी के साथ श्रीकृष्ण की लीलाओं के दिव्य रस का अमृत आस्वादन करते।

एई-मत महाप्रभुर सुखे काल याय ।
कृष्णेर विरह-विकार अङ्गे नाना हय ॥ १३॥

एइ-मत महाप्रभुर सुखे काल ग्राय ।
कृष्णेर विरह-विकार अङ्गे नाना हय ॥ १३॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **सुखे**—सुखमय; **काल ग्राय**—वक्त गुजरा; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण से; **विरह**—विरह; **विकार**—बदलाव; **अङ्गे**—शरीर पर; **नाना**—विविध; **हय**—हैं।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु सुखपूर्वक अपने दिन नीलाचल अर्थात् जगन्नाथपुरी में बिता रहे थे। कृष्ण से विरह के कारण उनके शरीर में अनेक दिव्य लक्षण प्रकट होते थे।

দিনে দিনে বাড়ে বিকার, রাত্র্যে অতিশয় ।
চিন্তা, উদ্বেগ, প্রলাপাদি যত শাস্ত্রে কয় ॥১৪॥

दिने दिने बाड़े विकार, रात्र्ये अतिशय ।
चिन्ता, उद्वेग, प्रलापादि यत शास्त्रे कय ॥ १४॥

दिने दिने—दिन प्रतिदिन; **बाड़े**—बढ़ते; **विकार**—बदलाव; **रात्र्ये अतिशय**—विशेष रूप से रात्रि में; **चिन्ता**—चिन्ता; **उद्वेग**—उत्तेजना; **प्रलाप**—पागल मनुष्य के समान बातचीत करना; **आदि**—इत्यादि; **यत**—जितने भी; **शास्त्रे कय**—शास्त्रों में उल्लिखित हैं।

अनुवाद

दिन प्रतिदिन ये लक्षण बढ़ते गये और रात में ये और भी अधिक बढ़ जाते। ये सारे लक्षण—यथा दिव्य चिन्ता, उद्वेग तथा उन्मत सा प्रलाप उसी रूप में विद्यमान थे, जैसाकि शास्त्रों में उनका वर्णन हुआ है।

স্বরূপ গোসাঞি, আর রামানন্দ-রায় ।
রাত্রি-দিনে করে দোঁহে প্রভুর সহায় ॥১৫॥

स्वरूप गोसाञि, आर रामानन्द-राय ।
रात्रि-दिने करे दोंहे प्रभुर सहाय ॥ १५॥

स्वरूप गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **आर**—तथा; **रामानन्द-राय**—रामानन्द राय; **रात्रि-दिने**—दिन-रात; **करे**—करते हैं; **दोंहे**—वे दोनों; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **सहाय**—सहायता।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं के प्रमुख सहायक स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय दिन-रात महाप्रभु के साथ रहते।

এক-দিন গোবিন্দ মহা-প্রসাদ লঞা ।
হরিদাসে দিতে গেলা আনন্দিত হঞা ॥১৬॥

एक-दिन गोविन्द महा-प्रसाद लञा ।
हरिदासे दिते गेला आनन्दित हञा ॥ १६॥

एक-दिन—एक दिन; **गोविन्द**—गोविन्द, श्री चैतन्य महाप्रभु के व्यक्तिगत सेवक;

महा-प्रसाद लञा—महाप्रसाद लेकर; **हरिदासे दिते**—हरिदास को देने; **गेला**—गया; **आनन्दित हञा**—अत्यन्त उल्लास के साथ।

अनुवाद

एक दिन श्री चैतन्य महाप्रभु का निजी सेवक गोविन्द बहुत ही आनन्दित होकर जगन्नाथजी का प्रसाद देने हरिदास ठाकुर के पास गया।

দেখে,—হরিদাস ঠাকুর করিয়াছে শয়ন ।
মন্দ মন্দ করিতেছে সঙ্খ্যা-সঙ্কীর্তন ॥১৭॥

देखे,—हरिदास ठाकुर करियाछे शयन ।
मन्द मन्द करितेछे सङ्ख्या-सङ्कीर्तन ॥१७॥

देखे—उसने देखा; **हरिदास ठाकुर**—हरिदास ठाकुर; **करियाछे शयन**—लेटे हुए थे; **मन्द मन्द**—धीरे धीरे; **करितेछे**—कर रहे थे; **सङ्ख्या सङ्कीर्तन**—जप करना।

अनुवाद

जब गोविन्द हरिदास ठाकुर के पास पहुँचा, तो उसने देखा कि वे अपनी पीठ के बल लेटे हैं और धीरे-धीरे जपमाला में जप कर रहे हैं।

গোবিন্দ কহে,—'উঠ আসি' করহ ভোজন' ।
হরিদাস কহে,—আজি করিমু লঙ্ঘন ॥১৮॥

गोविन्द कहे,—'उठ आसि' करह भोजन' ।
हरिदास कहे,—आजि करिमु लङ्घन ॥१८॥

गोविन्द कहे—गोविन्द ने कहा; **उठ**—कृपा करके उठिए; **आसि'**—आया हूँ; **करह भोजन**—आपके लिए प्रसाद लेकर; **हरिदास कहे**—हरिदास ने कहा; **आजि**—आज; **करिमु लङ्घन**—मैं उपवास रखूँगा।

अनुवाद

गोविन्द ने कहा, "कृपया उठकर अपना महाप्रसाद ग्रहण करें।" हरिदास ठाकुर ने उत्तर दिया, "आज मैं उपवास रखूँगा।"

সঙ্খ্যা-কীর্তন পূরে নাহি, কে-মতে খাইব? ।
মহা-প্রসাদ আনিয়াছ, কে-মতে উপেক্ষিব? ॥১৯॥

सङ्ख्या-कीर्तन पूरे नाहि, के-मते खाइब? ।
महा-प्रसाद आनियाछ, के-मते उपेक्षिब? ॥ १९ ॥

सङ्ख्या-कीर्तन—जप; **पूरे नाहि**—पूरा नहीं हुआ; **के-मते खाइब**—मैं कैसे भोजन करूँ?; **महा-प्रसाद आनियाछ**—तुम महाप्रसाद लाये हो; **के-मते उपेक्षिब**—मैं कैसे उपेक्षा करूँ?

अनुवाद

"मैंने अभी अपना जप पूर्ण नहीं किया है। तो फिर मैं कैसे खा सकता हूँ? किन्तु तुम तो महाप्रसाद लाये हो। भला मैं उसकी कैसे उपेक्षा करूँ?"

এত বলি' মহা-প্রসাদ করিলা বন্দন ।
এক রঞ্চ লঞা তার করিলা ভক্ষণ ॥২০॥

एत बलि' महा-प्रसाद करिला वन्दन ।
एक रञ्च लञा तार करिला भक्षण ॥ २० ॥

एत बलि'—यह कहकर; **महा-प्रसाद**—महाप्रसाद को; **करिला वन्दन**—वन्दन किया; **एक रञ्च**—छोटा निवाला; **लञा**—लिया; **तार करिला भक्षण**—सेवन किया।

अनुवाद

यह कहकर उन्होंने महाप्रसाद को नमस्कार किया और उसमें से रंचभर लेकर ग्रहण कर लिया।

तात्पर्य

महाप्रसाद कृष्ण से अभिन्न होता है। इसलिए महाप्रसाद को खाने के स्थान पर उसका सम्मान करना चाहिए। इसीलिए यहाँ कहा गया है—*करिला वन्दन।* महाप्रसाद ग्रहण करते समय उसे सामान्य भोजन नहीं मानना चाहिए। प्रसाद का अर्थ है कृपा। महाप्रसाद को कृष्ण की कृपा समझनी चाहिए। जैसाकि श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने कहा है, *कृष्ण बड़ दयामय करिबारे जिह्वा जय स्वप्रसाद-अन्न दिला भाइ।* कृष्ण अत्यन्त दयालु हैं। इस भौतिक जगत् में हम नाना प्रकार के भोजनों का स्वाद लेने में आसक्त रहते हैं। इसीलिए कृष्ण नाना प्रकार का भोजन करते हैं और उस भोजन को भक्तों को लौटा देते हैं, जिससे न केवल विविध स्वादों की तुष्टि होती है, अपितु प्रसाद खाने वाला आध्यात्मिक उन्नति

भी करता है। इसलिए हमें सामान्य भोजन को कभी भी महाप्रसाद के तुल्य नहीं समझना चाहिए।

আর দিন মহাপ্রভু তাঁর ঠাঞি আইলা ।
সুস্থ হও, হরিদাস—বলি' তাঁরে পুছিলা ॥২১॥

आर दिन महाप्रभु ताँर ठाञि आइला ।
सुस्थ हओ, हरिदास—बलि' ताँरे पुछिला ॥ २१ ॥

आर दिन—अगले दिन; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँर ठाञि**—उनके निवासस्थान पर; **आइला**—आये; **सुस्थ हओ**—आप ठीक हो; **हरिदास**—हे हरिदास; **बलि'**—कहकर; **ताँरे**—उनसे; **पुछिला**—पूछा।

अनुवाद

अगले दिन श्री चैतन्य महाप्रभु हरिदास के स्थान पर गये और उनसे पूछा, "हरिदास, तुम ठीक तो हो?"

নমস্কার করি' তেঁহো কৈলা নিবেদন ।
শরীর সুস্থ হয় মোর, অসুস্থ বুদ্ধি-মন ॥২২॥

नमस्कार करि' तेंहो कैला निवेदन ।
शरीर सुस्थ हय मोर, असुस्थ बुद्धि-मन ॥ २२ ॥

नमस्कार करि'—दंडवत् करके; **तेंहो**—वे, हरिदास ठाकुर; **कैला निवेदन**—निवेदन किया; **शरीर**—शरीर; **सुस्थ**—ठीक; **हय**—है; **मोर**—मेरा; **असुस्थ**—अस्वस्थ; **बुद्धि-मन**—मन और बुद्धि।

अनुवाद

हरिदास ने महाप्रभु को नमस्कार किया और उत्तर दिया, "मेरा शरीर तो स्वस्थ है, किन्तु मेरा मन और बुद्धि ठीक नहीं हैं।"

প্রভু কহে,—'কোন্ব্যাধি, কহ ত' নির্ণয়?' ।
তেঁহো কহে,—'সঙ্খ্যা-কীর্তন না পূরয়' ॥২৩॥

प्रभु कहे,—'कोन् व्याधि, कह त' निर्णय?' ।
तेंहो कहे,—'सङ्ख्या-कीर्तन ना पूरय' ॥ २३ ॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **कोन् व्याधि**—क्या पीड़ा; **कह त' निर्णय**—तुम्हें लगता है; **तेंहो कहे**—उन्होंने कहा; **सङ्ख्या-कीर्तन**—जप; **ना पूरय**—पूरा नहीं हुआ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने पुनः पूछा, "क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हारा रोग क्या है?" हरिदास ठाकुर ने उत्तर दिया, "मेरा रोग यही है कि मैं अपनी जप संख्या पूरी नहीं कर पा रहा हूँ।"

तात्पर्य

यदि कोई जप की निर्धारित संख्या पूरी नहीं कर पाता, तो उसे आध्यात्मिक जीवन की रुग्ण अवस्था में समझना चाहिए। श्रील हरिदास ठाकुर *नामाचार्य* कहलाते हैं। निस्सन्देह, हम हरिदास ठाकुर की नकल नहीं कर सकते, किन्तु हर व्यक्ति को निश्चित संख्या में नाम जप करना चाहिए। हमने अपने कृष्णभावनामृत आन्दोलन में सोलह माला का न्यूनतम नाम जप निर्धारित कर रखा है, जिससे पाश्चात्यवासी अपने आपको बोझिल अनुभव न करें। इन सोलह मालाओं का जप तो करना ही चाहिए और वह भी उच्च स्वर से, जिससे जपकर्ता स्वयं सुन सके और अन्य लोग भी सुनें।

প্রভু কহে,—"বৃদ্ধ হ-ইলা 'সঙ্খ্যা' অল্প কর ।
সিদ্ধ-দেহ তুমি, সাধনে আগ্রহ কেনে কর? ॥২৪॥

प्रभु कहे,—"वृद्ध ह-इला 'सङ्ख्या' अल्प कर ।
सिद्ध-देह तुमि, साधने आग्रह केने कर? ॥ २४॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **वृद्ध ह-इला**—तुम वृद्ध हो चुके हो; **सङ्ख्या अल्प कर**—संख्या घटा दो; **सिद्ध-देह तुमि**—तुम पहले ही मुक्त हो चुके हो; **साधने**—साधना; **आग्रह केने कर**—तुम क्यों उत्सुक हो?

अनुवाद

महाप्रभु ने कहा, "चूँकि अब तुम वृद्ध हो गये हो, अतः नित्य जप किये जाने की नाम संख्या घटा सकते हो। तुम तो पहले से मुक्त हो, अतएव तुम्हें कठोरता से नियमों का पालन करने की आवश्यकता नहीं है।

तात्पर्य

जब तक ईश्वर के रागानुग प्रेम के पद तक पहुँच न लिया जाय, तब तक विधि-विधानों का पालन करना चाहिए। हरिदास ठाकुर इसके जीवन्त प्रमाण थे कि विधि-विधानों का किस तरह पालन किया जाय। इसी तरह श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी भी जीवन्त दृष्टान्त थे। *षड् गोस्वामी अष्टक* में कहा गया है—*सङ्ख्यापूर्वकनामगाननतिभिः कालावसानीकृतौ।* सारे गोस्वामी भी और विशेष रूप से रघुनाथ दास गोस्वामी सारे विधि-विधानों का कड़ाई से पालन करते थे। पहला नियम यह है कि हरे कृष्ण मन्त्र का उच्चारण इतने उच्च स्वर में किया जाय कि जपकर्ता स्वयं उसे सुन सके और निश्चित संख्या में माला जप का व्रत लिया जाय। रघुनाथ दास गोस्वामी न केवल निश्चित माला का जप करते थे, अपितु उन्होंने अनेक बार भगवान् को नमस्कार करने का भी व्रत ले रखा था।

লোক নিস্তারিতে এই তোমার 'অবতার'।
নামের মহিমা লোকে করিলা প্রচার ॥২৫॥

लोक निस्तारिते एइ तोमार 'अवतार'।
नामेर महिमा लोके करिला प्रचार ॥ २५॥

लोक निस्तारिते—लोगों का उद्धार करना; **एइ**—यह; **तोमार अवतार**—आपका अवतार; **नामेर महिमा**—हरिनाम का महिमा करने; **लोके**—यह लोक में; **करिला प्रचार**—तुमने प्रचार किया है।

अनुवाद

"इस अवतार में तुम्हारी भूमिका सामान्य लोगों का उद्धार करने की है। तुमने इस जगत् में पवित्र नाम की महिमा का पर्याप्त प्रचार किया है।"

तात्पर्य

हरिदास ठाकुर *नामाचार्य* कहलाते हैं, क्योंकि उन्होंने हरिनाम कीर्तन की महिमा का प्रचार किया। *तोमार अवतार* कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु पुष्टि करते हैं कि हरिदास ठाकुर ब्रह्माजी के अवतार हैं। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि बड़े-बड़े भक्त भगवान् को उनके अभीष्ट कार्य में सहायता

पहुँचाते हैं और ऐसे भक्त या निजी सहायक भगवान् की इच्छा से अवतरित होते हैं। भगवान् स्वेच्छा से अवतरित होते हैं और उनकी इच्छा से दक्ष भक्त भी उनके अभीष्ट कार्य में सहायता करने हेतु अवतरित होते हैं। इस प्रकार हरिदास ठाकुर ब्रह्माजी के अवतार हैं और अन्य भक्त भी, जो भगवान् के अभीष्ट कार्य को सम्पन्न करने में सहायता करते हैं, उसी तरह से अवतार होते हैं।

এবে অল্প সঙ্খ্যা করি' কর সঙ্কীর্তন'' ।
হরিদাস কহে,—''শুন মোর সত্য নিবেদন ॥২৬॥

एबे अल्प सङ्ख्या करि' कर सङ्कीर्तन" ।
हरिदास कहे,—"शुन मोर सत्य निवेदन ॥ २६ ॥

एबे—अब; **अल्प सङ्ख्या**—अल्प संख्या में जप; **करि'**—करो; **कर सङ्कीर्तन**—हरे कृष्ण महामन्त्र; **हरिदास कहे**—हरिदास ठाकुर ने कहा; **शुन**—कृपा करके सुनिये; **मोर**—मेरा; **सत्य**—वास्तविक; **निवेदन**—निवेदन।

अनुवाद

महाप्रभु ने अन्त में कहा, "इसलिए, अब हरे कृष्ण महामन्त्र की जप संख्या कम करो।" हरिदास ठाकुर ने उत्तर दिया, "आप कृपया मेरे वास्तविक निवेदन को सुनें।

হীন-জাতি জন্ম মোর নিন্দ্য-কলেবর ।
হীন-কর্মে রত মুঞি অধম পামর ॥২৭॥

हीन-जाति जन्म मोर निन्द्य-कलेवर ।
हीन-कर्मे रत मुञि अधम पामर ॥ २७॥

हीन-जाति—निम्न वर्ग के परिवार; **जन्म मोर**—मेरा जन्म; **निन्द्य**—निकृष्ट; **कलेवर**—शरीर; **हीन-कर्मे**—निम्न कार्यों में; **रत मुञि**—पूरी तरह व्यस्त हूँ; **अधम**—निम्न वर्ग के मनुष्य; **पामर**—सबसे अधिक निन्दित।

अनुवाद

"मैं निम्न कुल में उत्पन्न हुआ और मेरा शरीर अत्यन्त गर्हित है। मैं

सदैव निम्न कार्यों में लगा रहा हूँ। इसलिए मैं सबसे नीच तथा गर्हित व्यक्ति हूँ।

অদৃশ্য, অস্পৃশ্য মোরে অঙ্গীকার কৈলা ।
রৌরব হ-ইতে কাড়ি' মোরে বৈকুণ্ঠে চড়াইলা ॥২৮॥

অদৃশ্য, অস্পৃশ্য মোরে অঙ্গীকার কৈলা ।
রৌরব হ-ইতে কাড়ি' মোরে বৈকুণ্ঠে চড়াইলা ॥ ২৮ ॥

अदृश्य—न देखने योग्य; **अस्पृश्य**—अस्पृश्य; **मोरे**—मैं; **अङ्गीकार कैला**—आपने स्वीकार किया है; **रौरव ह-इते**—नारकीय स्थिति से; **काड़ि'**—निकाला; **मोरे**—मुझे; **वैकुण्ठे चड़ाइला**—वैकुंठ तक उठाया।

अनुवाद

"मैं न देखने योग्य तथा अछूत हूँ, किन्तु आपने मुझे अपने सेवक के रूप में स्वीकार किया है। इसका अर्थ हुआ कि आपने मुझे नारकीय स्थिति से उद्धार किया है और वैकुण्ठ पद पर पहुँचाया है।

স্বতন্ত্র ঈশ্বর তুমি হও ইচ্ছাময় ।
জগদ্ব্রাচাও, যারে যৈছে ইচ্ছা হয় ॥২৯॥

স্বতন্ত্র ঈশ্বর তুমি হঅো ইচ্ছাময় ।
জগত্ নাচাঅো, য়্যারে য়্যৈছে ইচ্ছা হয় ॥ ২৯ ॥

स्वतन्त्र—स्वतन्त्र; **ईश्वर**—ईश्वर; **तुमि**—आप; **हओ**—हो; **इच्छा-मय**—आपकी इच्छानुसार व्यवहार कर सकते हो; **जगत्**—जगत्; **नाचाओ**—नृत्य करवाते हो; **य्यारे**—जो; **य्यैछे**—जिस प्रकार; **इच्छा हय**—आप इच्छा करो।

अनुवाद

"हे प्रभु, आप पूर्णतः स्वतन्त्र ईश्वर हैं। आप अपनी स्वतन्त्र इच्छा से कार्य करते हैं। आप अपनी इच्छानुसार सारे जगत् को नचाते हैं तथा काम में लगाते हैं।

অনেক নাচাইলা মোরে প্রসাদ করিয়া ।
বিপ্রের শ্রাদ্ধ-পাত্র খাইনু 'ম্লেচ্ছ' হঞা ॥৩০॥

अनेक नाचाइला मोरे प्रसाद करिया ।
विप्रेर श्राद्ध-पात्र खाइनु 'म्लेच्छ' हञा ॥ ३० ॥

अनेक—अनेक प्रकार से; **नाचाइला**—नृत्य करवाया है; **मोरे**—मुझे; **प्रसाद करिया**—आपकी कृपा से; **विप्रेर**—ब्राह्मणों के लिए; **श्राद्ध-पात्र**—श्राद्ध की थाल; **खाइनु**—मैंने सेवन किया; **म्लेच्छ हञा**—म्लेच्छ परिवार में जन्म लेने के बावजूद।

अनुवाद

"हे प्रभु, अपनी कृपा से आपने मुझे नाना प्रकार से नचाया है। उदाहरणार्थ, मुझे श्राद्ध पात्र दिलाया, जो कि उत्तम ब्राह्मण को दिया जाना चाहिए था। मैंने उसमें भोजन किया, यद्यपि मेरा जन्म मांसाहारियों के कुल में हुआ था।

तात्पर्य

श्राद्ध पात्र के विषय में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने अपने *अनुभाष्य* में *विष्णु स्मृति* से निम्नलिखित उद्धरण दिया है :

ब्राह्मणापसदा ह्येते कथिता: पङ्क्तिदूषका: ।
एतान् विवर्जयेद्यत्नात् श्राद्धकर्मणि पण्डित: ।

इस श्लोक के अनुसार यदि कोई व्यक्ति ब्राह्मण कुल में जन्म लेता है, किन्तु ब्राह्मण मानदण्डों के अनुसार आचरण नहीं करता, तो उसे *श्राद्ध पात्र* नहीं दिया जाना चाहिए। यह श्राद्ध पात्र पितरों को दिया जाने वाला प्रसाद होता है। अद्वैत आचार्य ने ब्राह्मण कुल में उत्पन्न एक ब्राह्मण को यह श्राद्ध पात्र देने के बदले हरिदास ठाकुर को दिया। यद्यपि हरिदास ठाकुर का जन्म मांसाहारी परिवार में हुआ था, किन्तु उन्नत भक्त होने के कारण उनका सम्मान उत्तम कोटि के ब्राह्मण से भी बढ़कर किया जाता था।

এক বাঞ্ছা হয় মোর বহু দিন হৈতে ।
লীলা সম্বরিবে তুমি—লয় মোর চিত্তে ॥ ৩১ ॥

एक वाञ्छा हय मोर बहु दिन हैते ।
लीला सम्वरिबे तुमि—लय मोर चित्ते ॥ ३१ ॥

एक वाञ्छा—एक इच्छा; **हय**—है; **मोर**—मेरी; **बहु दिन**—बहुत समय से; **हैते**—

चूँकि; **लीला**—आपकी लीला; **सम्वरिबे तुमि**—आप अन्त करोगे; **लय मोर चित्ते**—मैं सोच रहा हूँ।

अनुवाद

"दीर्घकाल से मेरी एक इच्छा रही है। हे प्रभु, मेरे विचार से आप अत्यन्त शीघ्र इस भौतिक जगत् से अपनी लीला समाप्त कर देंगे।

সেই লীলা প্রভু মোরে কভু না দেখাইবা ।
আপনার আগে মোর শরীর পাড়িবা ॥৩২॥

সেই লীলা প্রভু মোরে কভু না দেখাইবা ।
আপনার আগে মোর শরীর পাড়িবা ॥ ৩২ ॥

সেই লীলা—वह लीला; **প্রভু**—प्रभु; **মোরে**—मुझे; **কভু**—कभी; **না দেখাইবা**—ना दिखाना; **আপনার আগে**—आपके आगे; **মোর শরীর**—मेरा शरीर; **পাড়িবা**—गिरने दें।

अनुवाद

"मैं चाहता हूँ कि आप अपनी लीला का यह अन्तिम अध्याय मुझे नहीं दिखलायें। इसके पूर्व कि वह समय आये, मैं चाहता हूँ कि मेरा शरीर आपके सामने धराशायी हो जाय।

হৃদয়ে ধরিমু তোমার কমল চরণ ।
নয়নে দেখিমু তোমার চাঁদ বদন ॥৩৩॥

হৃদয়ে ধরিমু তোমার কমল চরণ ।
নয়নে দেখিমু তোমার চাঁদ বদন ॥ ৩৩ ॥

হৃদয়ে—मेरे हृदय में; **ধরিমু**—मैं बसाऊँ; **তোমার**—आपके; **কমল চরণ**—चरणकमल; **নয়নে**—मेरे नयनों से; **দেখিমু**—मैं देखूं; **তোমার**—आपका; **চাঁদ বদন**—चन्द्र समान मुख।

अनुवाद

"मैं आपके कमलवत् चरणों को अपने हृदय में धारण करना चाहता हूँ और आपके चन्द्रमा सदृश मुखमण्डल का दर्शन करना चाहता हूँ।

জিহ্বায় উচ্চারিমু তোমার 'কৃষ্ণ-চৈতন্য'-নাম ।
এই-মত মোর ইচ্ছা,—ছাড়িমু পরাণ ॥ ৩৪ ॥

জিহ্বায় উচ্চারিমু তোমার 'কৃষ্ণ-চৈতন্য'-নাম ।
এই-মত মোর ইচ্ছা,—ছাড়িমু পরাণ ॥ ৩৪ ॥

जिह्वाय—मेरी जीभ से; **उच्चारिमु**—मैं जपूं; **तोमार**—आपका; **कृष्ण-चैतन्य-नाम**—श्रीकृष्ण चैतन्य का पवित्र नाम; **एइ-मत**—इस प्रकार; **मोर इच्छा**—मेरी इच्छा; **छाड़िमु पराण**—प्राण न्यौच्छावर कर दूँ।

अनुवाद

"मेरी इच्छा है कि मैं अपनी जीभ से आपका 'श्रीकृष्णचैतन्य' नाम उच्चारण करूँ। कृपया मुझे इस तरह से अपना शरीर छोड़ने दें।

মোর এই ইচ্ছা যদি তোমার প্রসাদে হয় ।
এই নিবেদন মোর কর, দয়াময় ॥ ৩৫ ॥

মোর এই ইচ্ছা যদি তোমার প্রসাদে হয় ।
এই নিবেদন মোর কর, দয়াময় ॥ ৩৫ ॥

मोर—मेरी; **एइ**—इस; **इच्छा**—इच्छा; **यदि**—यदि; **तोमार प्रसादे**—आपकी कृपा से; **हय**—है; **एइ निवेदन**—यह निवेदन; **मोर**—मेरा; **कर**—करें; **दया-मय**—हे कृपाशाली।

अनुवाद

"हे अत्यन्त दयालु प्रभु, यदि आपकी कृपा से ऐसा हो सके, तो कृपया मेरी इच्छा पूरी करें।

এই নীচ দেহ মোর পড়ুক তব আগে ।
এই বাঞ্ছা-সিদ্ধি মোর তোমাতেই লাগে'' ॥ ৩৬ ॥

এই নীচ দেহ মোর পড়ুক তব আগে ।
এই বাঞ্ছা-সিদ্ধি মোর তোমাতেই লাগে" ॥ ৩৬ ॥

एइ—इस; **नीच**—निम्न; **देह**—शरीर; **मोर**—मेरा; **पड़ुक**—गिरने दें; **तव आगे**—आपके आगे; **एइ**—यह; **वाञ्छा-सिद्धि**—इच्छाओं की पूर्णता; **मोर**—मेरी; **तोमातेइ**—आपके द्वारा; **लागे**—सम्भव हो सकती है।

अनुवाद

"इस नीच देह को आपके सामने गिर जाने दें। आप मेरी सारी इच्छाओं की पूर्णता को सम्भव बना सकते हैं।"

প্রভু কহে,—"হরিদাস, যে তুমি মাগিবে ।
কৃষ্ণ কৃপাময় তাহা অবশ্য করিবে ॥৩৭॥

प्रभु कहे,—"हरिदास, ये तुमि मागिबे ।
कृष्ण कृपामय ताहा अवश्य करिबे ॥ ३७ ॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **हरिदास**—मेरे प्रिय हरिदास; **ये**—जो भी; **तुमि**—तुम; **मागिबे**—निवेदन; **कृष्ण**—श्रीकृष्ण; **कृपा-मय**—कृपामय; **ताहा**—वह; **अवश्य**—अवश्य; **करिबे**—पूर्ण करेंगे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "हे हरिदास, कृष्ण इतने दयामय हैं कि तुम जो भी चाहते हो, उसे वे अवश्य पूरा करेंगे।

কিন্তু আমার যে কিছু সুখ, সব তোমা লঞা ।
তোমার যোগ্য নহে,—যাবে আমারে ছাড়িয়া" ॥৩৮॥

किन्तु आमार ये किछु सुख, सब तोमा लञा ।
तोमार योग्य नहे,—याबे आमारे छाड़िया" ॥ ३८ ॥

किन्तु—किन्तु; **आमार**—मेरा; **ये**—जो भी; **किछु**—कुछ; **सुख**—सुख; **सब**—सब; **तोमा लञा**—तुम्हारे संग से; **तोमार**—तुम्हारा; **योग्य नहे**—योग्य नहीं है; **याबे**—तुम चले जाओगे; **आमारे छाड़िया**—मुझे छोड़कर।

अनुवाद

"किन्तु मेरा जो भी सुख है, वह तुम्हारी संगति के कारण है। यह तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं है कि तुम चले जाओ और मुझे अकेला छोड़ जाओ।"

চরণে ধরি' কহে হরিদাস,—"না করিহ 'মায়া' ।
অবশ্য মো-অধমে, প্রভু, কর এই 'দয়া' ॥৩৯॥

चरणे धरि' कहे हरिदास,—"ना करिह 'माया' ।
अवश्य मो-अधमे, प्रभु, कर एइ 'दया' ॥ ३९ ॥

चरणे—चरणकमल; **धरि'**—पकड़कर; **कहे**—कहा; **हरिदास**—हरिदास ठाकुर; **ना करिह माया**—माया न बनाएं; **अवश्य**—अवश्य; **मो-अधमे**—मैं जो निम्न हूँ; **प्रभु**—प्रभु; **कर एइ दया**—दया दिखाएँ।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर ने श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों को पकड़कर कहा, "हे प्रभु, कृपया आप माया उत्पन्न न करें। यद्यपि मैं अत्यन्त पतित हूँ, किन्तु आप मुझ पर यह दया अवश्य दिखलायें!

মোর শিরোমণি কত কত মহাশয় ।
তোমার লীলার সহায় কোটি-ভক্ত হয় ॥ ৪০ ॥

मोर शिरोमणि कत कत महाशय ।
तोमार लीलार सहाय कोटि-भक्त हय ॥ ४० ॥

मोर—मेरा; **शिरोमणि**—शिरोमणि; **कत कत**—बहुत सारे; **महाशय**—महाशय; **तोमार लीलार**—आपकी लीला में; **सहाय**—सहायक; **कोटि-भक्त**—कोटि भक्त; **हय**—हैं।

अनुवाद

"हे प्रभु, ऐसे अनेक सम्मानित व्यक्ति एवं करोड़ों भक्त हैं, जो मेरे सिर पर बैठने योग्य हैं। वे सभी आपकी लीला में सहायक हैं।

আমা-হেন যদি এক কীট মরি' গেল ।
এক পিপীলিকা মৈলে পৃথ্বীর কাহাঁ হানি হৈল? ॥ ৪১ ॥

आमा-हेन यदि एक कीट मरि' गेल ।
एक पिपीलिका मैले पृथ्वीर काहाँ हानि हैल? ॥ ४१ ॥

आमा-हेन—मेरे जैसा; **यदि**—यदि; **एक**—एक; **कीट**—कीड़ा; **मरि' गेल**—मर जाता है; **एक**—एक; **पिपीलिका**—चींटी; **मैले**—यदि मर जाती है; **पृथ्वीर**—पृथ्वी पर; **काहाँ**—कहाँ; **हानि हैल**—कोई नुकसान होगा।

अनुवाद

"हे प्रभु, यदि मुझ जैसा कोई तुच्छ कीट मर भी जाय, तो कौन सी

हानि है? यदि एक चींटी मरती है, तो भौतिक जगत् की कौन सी हानि हो जाती है?

'ভকত-বত্সল' প্রভু, তুমি, মুই 'ভক্তাভাস' ।
অবশ্য পূরাবে, প্রভু, মোর এই আশ'' ॥৪২॥

'भकत-वत्सल' प्रभु, तुमि, मुइ 'भक्ताभास' ।
अवश्य पूराबे, प्रभु, मोर एइ आश" ॥४२॥

भकत-वत्सल—भक्तों के प्रति सदैव स्नेहमय; **प्रभु**—हे प्रभु; **तुमि**—आप; **मुइ**—मैं; **भक्त-आभास**—एक कृत्रिम भक्त; **अवश्य**—अवश्य; **पूराबे**—आप पूर्ण करेंगे; **प्रभु**—हे प्रभु; **मोर**—मेरी; **एइ**—यह; **आश**—इच्छा।

अनुवाद

"हे प्रभु, आप सदैव अपने भक्तों के प्रति स्नेहिल रहते हैं। मैं तो एक कृत्रिम भक्त हूँ, फिर भी मैं चाहता हूँ कि आप मेरी इच्छा पूरी करें। यही मेरी आशा है।"

মধ্যাহ্ন করিতে প্রভু চলিলা আপনে ।
ঈশ্বর দেখিয়া কালি দিবেন দরশনে ॥৪৩॥

मध्याह्न करिते प्रभु चलिला आपने ।
ईश्वर देखिया कालि दिबेन दरशने ॥४३॥

मध्याह्न करिते—अपने दोपहर के कार्य पूर्ण करने; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चलिला आपने**—उठे; **ईश्वर देखिया**—जगन्नाथ भगवान् के दर्शन के बाद; **कालि**—दूसरे दिन; **दिबेन दरशने**—वे हरिदास ठाकुर को मिलेंगे।

अनुवाद

चूँकि दोपहर के कृत्य करने शेष थे, अतएव श्री चैतन्य महाप्रभु वहाँ से विदा होने के लिए उठ खड़े हुए। किन्तु यह तय हुआ कि अगले दिन वे भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने के बाद हरिदास ठाकुर को देखने आयेंगे।

তবে মহাপ্রভু তাঁরে করি' আলিঙ্গন ।
মধ্যাহ্ন করিতে সমুদ্রে করিলা গমন ॥৪৪॥

तबे महाप्रभु ताँरे करि' आलिङ्गन ।
मध्याह्न करिते समुद्रे करिला गमन ॥ ४४॥

तबे—तब; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—हरिदास ठाकुर को; **करि'**—करके; **आलिङ्गन**—आलिंगन; **मध्याह्न करिते**—अपने दोपहर के कार्यों को पूर्ण करने; **समुद्रे**—समुद्र की ओर; **करिला गमन**—गये।

अनुवाद

उनका आलिंगन करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु अपने दोपहर के कृत्य करने चले गये और स्नान करने हेतु समुद्र गये।

প্রাতঃ-কালে ঈশ্বর দেখি' সব ভক্ত লঞা ।
হরিদাসে দেখিতে আইলা শীঘ্র করিয়া ॥ ৪৫॥

प्रातः-काले ईश्वर देखि' सब भक्त लञा ।
हरिदासे देखिते आइला शीघ्र करिया ॥ ४५॥

प्रातः-काले—प्रातः काल में; **ईश्वर देखि'**—जगन्नाथ भगवान् के दर्शन करने के बाद; **सब भक्त**—सभी भक्त; **लञा**—के संग; **हरिदासे**—हरिदास; **देखिते**—देखने; **आइला**—आये; **शीघ्र करिया**—शीघ्रता से।

अनुवाद

अगले दिन प्रातःकाल जगन्नाथ मन्दिर जाने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु अपने अन्य सारे भक्तों के साथ तेजी से हरिदास ठाकुर को देखने आये।

হরিদাসের আগে আসি' দিলা দরশন ।
হরিদাস বন্দিলা প্রভুর আর বৈষ্ণব-চরণ ॥ ৪৬॥

हरिदासेर आगे आसि' दिला दरशन ।
हरिदास वन्दिला प्रभुर आर वैष्णव-चरण ॥ ४६॥

हरिदासेर—हरिदास ठाकुर के; **आगे**—आगे; **आसि'**—आकर; **दिला दरशन**—दर्शन दिये; **हरिदास**—हरिदास ठाकुर; **वन्दिला**—वन्दन करके; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **आर**—और; **वैष्णव**—वैष्णवों; **चरण**—के कमलचरणों में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु तथा अन्य भक्त हरिदास ठाकुर के समक्ष आये। हरिदास ठाकुर ने श्री चैतन्य महाप्रभु तथा समस्त वैष्णवों के चरणकमलों में नमस्कार किया।

প্রভু কহে,—'হরিদাস, কহ সমাচার' ।
হরিদাস কহে,—'প্রভু, যে কৃপা তোমার' ॥ ৪৭ ॥

प्रभु कहे,—'हरिदास, कह समाचार' ।
हरिदास कहे,—'प्रभु, ये कृपा तोमार' ॥ ४७ ॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभू ने कहा; **हरिदास**—मेरे प्रिय हरिदास; **कह समाचार**—क्या समाचार है; **हरिदास कहे**—हरिदास ने उत्तर दिया; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **ये**—जो भी; **कृपा**—कृपा; **तोमार**—आपकी।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने पूछा, "हे हरिदास, क्या समाचार है?" हरिदास ठाकुर ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, आप मुझ पर जो भी कृपा करें।"

অঙ্গনে আরম্ভিলা প্রভু মহা-সঙ্কীর্তন ।
বক্রেশ্বর-পণ্ডিত তাহাঁ করেন নর্তন ॥ ৪৮ ॥

अङ्गने आरम्भिला प्रभु महा-सङ्कीर्तन ।
वक्रेश्वर-पण्डित ताहाँ करेन नर्तन ॥ ४८ ॥

अङ्गने—आंगन में; **आरम्भिला**—आरम्भ हुआ; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **महा-सङ्कीर्तन**—भव्य संकीर्तन; **वक्रेश्वर-पण्डित**—वक्रेश्वर पण्डित; **ताहाँ**—वहाँ; **करेन नर्तन**—नृत्य किया।

अनुवाद

यह सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने तुरन्त आंगन में महान् संकीर्तन प्रारम्भ कर दिया। इसमें वक्रेश्वर पण्डित प्रमुख नर्तक थे।

স্বরূপ-গোসাঞি আদি যত প্রভুর গণ ।
হরিদাসে বেড়ি' করে নাম-সঙ্কীর্তন ॥ ৪৯ ॥

स्वरूप-गोसाञि आदि यत प्रभुर गण ।
हरिदासे बेड़ि' करे नाम-सङ्कीर्तन ॥ ४९ ॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **आदि**—तथा अन्य; **यत**—सब; **प्रभुर गण**—प्रभु के साथी; **हरिदासे बेड़ि'**—हरिदास ठाकुर के आसपास; **करे**—किया; **नाम-सङ्कीर्तन**—नाम संकीर्तन।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोस्वामी इत्यादि श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्तों ने हरिदास ठाकुर को घेर लिया और संकीर्तन प्रारम्भ कर दिया।

রামানন্দ, সার্বভৌম, সবার অগ্রেতে ।
হরিদাসের গুণ প্রভু লাগিলা কহিতে ॥৫০॥

रामानन्द, सार्वभौम, सबार अग्रेते ।
हरिदासेर गुण प्रभु लागिला कहिते ॥ ५० ॥

रामानन्द—रामानन्द राय; **सार्वभौम**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **सबार**—सभी; **अग्रेते**—के आगे; **हरिदासेर**—हरिदास ठाकुर के; **गुण**—गुण; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लागिला कहिते**—वर्णन करने लगे।

अनुवाद

रामानन्द राय तथा सार्वभौम भट्टाचार्य जैसे सारे महान् भक्तों के समक्ष श्री चैतन्य महाप्रभु हरिदास ठाकुर के पवित्र गुणों का वर्णन करने लगे।

হরিদাসের গুণ কহিতে প্রভু হ-ইলা পঞ্চ-মুখ ।
কহিতে কহিতে প্রভুর বাড়ে মহা-সুখ ॥৫১॥

हरिदासेर गुण कहिते प्रभु ह-इला पञ्च-मुख ।
कहिते कहिते प्रभुर बाड़े महा-सुख ॥ ५१ ॥

हरिदासेर—हरिदास ठाकुर के; **गुण**—गुण; **कहिते**—कहते; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ह-इला**—हो गये; **पञ्च-मुख**—मानो पंच मुखी; **कहिते कहिते**—वर्णन करते समय; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **बाड़े**—बड़ा; **महा-सुख**—भव्य सुख।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु हरिदास ठाकुर के दिव्य गुणों का वर्णन

करने लगे, तो ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों उनके पाँच मुख हों। उन्होंने जितना ही अधिक वर्णन किया, उनका सुख उतना ही बढ़ता गया।

হরিদাসের গুণে সবার বিস্মিত হয় মন ।
সর্ব-ভক্ত বন্দে হরিদাসের চরণ ॥৫২॥

হরিদাসের গুণে সবার বিস্মিত হয় মন ।
সর্ব-ভক্ত বন্দে হরিদাসের চরণ ॥৫২॥

হরিদাসের—हरिदास ठाकुर के; **गुणे**—गुण; **सबार**—सभी; **विस्मित**—आश्चर्यचकित; **हय**—हुए; **मन**—मन; **सर्व-भक्त**—सभी भक्त; **वन्दे**—वन्दन करते; **हरिदासेर चरण**—हरिदास ठाकुर के कमलचरणों में।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर के दिव्य गुणों को सुनकर वहाँ उपस्थित सारे भक्त आश्चर्यचकित हो गये। उन सबों ने हरिदास ठाकुर के चरणकमलों की वन्दना की।

হরিদাস নিজাগ্রেতে প্রভুরে বসাইলা ।
নিজ-নেত্র—দুই ভৃঙ্গ—মুখ-পদ্মে দিলা ॥৫৩॥

হরিদাস নিজাগ্রেতে প্রভুরে বসাইলা ।
নিজ-নেত্র—দুই ভৃঙ্গ—মুখ-পদ্মে দিলা ॥৫৩॥

हरिदास—हरिदास ठाकुर; **निज-अग्रेते**—स्वयं के सामने; **प्रभुरे वसाइला**—प्रभु को आसन ग्रहण कराया; **निज-नेत्र**—उनके नेत्र; **दुइ भृङ्ग**—मानो दो भौंरों के समान; **मुख-पद्मे**—कमल समान मुख पर; **दिला**—केन्द्रित किया।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर ने श्री चैतन्य महाप्रभु को अपने समक्ष बैठाया और तब भौंरों के तुल्य अपने दोनों नेत्र महाप्रभु के मुखमण्डल पर टिका दिये।

স্ব-হৃদয়ে আনি' ধরিল প্রভুর চরণ ।
সর্ব-ভক্ত-পদ-রেণু মস্তক-ভূষণ ॥৫৪॥

स्व-हृदये आनि' धरिल प्रभुर चरण ।
सर्व-भक्त-पद-रेणु मस्तक-भूषण ॥५४॥

स्व-हृदये—उनके हृदय पर; **आनि'**—लाकर; **धरिल**—रखे; **प्रभुर चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल; **सर्व-भक्त**—सभी भक्तों के; **पद-रेणु**—चरणों की धूल; **मस्तक-भूषण**—मस्तक का आभूषण।

अनुवाद

उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों को अपने हृदय पर धारण किया और तब समस्त भक्तों के चरणों की धूलि लेकर अपने मस्तक पर लगाई।

'श्री-कृष्ण-चैतन्य' शब्द बलेन बार बार ।
प्रभु-मुख-माधुरी पिये, नेत्रे जल-धार ॥५५॥
'श्री-कृष्ण-चैतन्य' शब्द बलेन बार बार ।
प्रभु-मुख-माधुरी पिये, नेत्रे जल-धार ॥५५॥

श्री-कृष्ण-चैतन्य—श्रीकृष्ण चैतन्य; **शब्द**—कंपन; **बलेन**—कहे; **बार बार**—बार-बार; **प्रभु-मुख-माधुरी**—श्री चैतन्य महाप्रभु के मुख का माधुर्य; **पिये**—पीते; **नेत्रे**—नेत्रों से; **जल-धार**—जल धारा।

अनुवाद

उन्होंने श्रीकृष्ण चैतन्य के पवित्र नाम का बारम्बार उच्चारण किया। जब उन्होंने महाप्रभु के मुख की मधुरता का पान किया, तो उनके नेत्रों से लगातार अश्रु बहने लगे।

'श्री-कृष्ण-चैतन्य' शब्द करिते उच्चारण ।
नामेर सहित प्राण कैल उत्क्रामण ॥५६॥
'श्री-कृष्ण-चैतन्य' शब्द करिते उच्चारण ।
नामेर सहित प्राण कैल उत्क्रामण ॥५६॥

श्री-कृष्ण-चैतन्य—श्रीकृष्ण चैतन्य; **शब्द**—शब्द का कंपन; **करिते उच्चारण**—उच्चार करके; **नामेर सहित**—नाम के साथ; **प्राण**—प्राण; **कैल उत्क्रामण**—चले गये।

अनुवाद

श्रीकृष्ण चैतन्य का नाम उच्चारण करते-करते उन्होंने प्राण त्याग दिये और अपना शरीर छोड़ दिया।

महा-योगेश्वर-प्राय देखि' स्वच्छन्दे मरण ।
'भीष्मेर निर्याण' सबार ह-इल स्मरण ॥५७॥

महा-योगेश्वर-प्राय देखि' स्वच्छन्दे मरण ।
'भीष्मेर निर्याण' सबार ह-इल स्मरण ॥५७॥

महा-योगेश्वर-प्राय—एक महान गूढ़ योगी के समान; **देखि'**—देखकर; **स्वच्छन्दे**—स्वयं की इच्छा से; **मरण**—मरते; **भीष्मेर निर्याण**—भीष्म के चले जाने के समान; **सबार ह-इल स्मरण**—सभी को स्मरण हुआ।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर की अद्भुत इच्छा-मृत्यु देखकर हर व्यक्ति को भीष्म के मरण का स्मरण हो आया, क्योंकि यह मृत्यु महान् योगी की मृत्यु जैसी थी।

'हरि' 'कृष्ण'-शब्दे सबे करे कोलाहल ।
प्रेमानन्दे महाप्रभु ह-इला विह्वल ॥५८॥

'हरि' 'कृष्ण'-शब्दे सबे करे कोलाहल ।
प्रेमानन्दे महाप्रभु ह-इला विह्वल ॥५८॥

हरि—हरि; **कृष्ण**—कृष्ण; **शब्दे**—शब्द कंपन से; **सबे**—सभी; **करे**—करे; **कोलाहल**—कोलाहल; **प्रेम-आनन्दे**—प्रेम आनन्द में; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ह-इला विह्वल**—विह्वल हुए।

अनुवाद

जब सबों ने 'हरि' तथा 'कृष्ण' के पवित्र नामों का कीर्तन किया, तो कोलाहल मच गया। श्री चैतन्य महाप्रभु प्रेमानन्द से विह्वल हो उठे।

हरिदासेर तनु प्रभु कोले लैल उठाञा ।
अङ्गने नाचेन प्रभु प्रेमाविष्ट हञा ॥५९॥

हरिदासेर तनु प्रभु कोले लैल उठाञा ।
अङ्गने नाचेन प्रभु प्रेमाविष्ट हञा ॥ ५९ ॥

हरिदासेर—हरिदास ठाकुर के; **तनु**—देह; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कोले**—गोद में; **लैल**—लिया; **उठाञा**—उठाकर; **अङ्गने**—आँगन में; **नाचेन**—नृत्य करे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रेम-आविष्ट हञा**—अत्यधिक प्रेम भावना से।

अनुवाद

महाप्रभु ने हरिदास ठाकुर के शरीर को उठाकर अपनी गोद में ले लिया और वे अत्यन्त प्रेमावेश में आकर आँगन में नृत्य करने लगे।

প্রভুর আবেশে অবশ সর্ব-ভক্ত-গণ ।
প্রেমাবেশে সবে নাচে, করেন কীর্তন ॥ ৬০ ॥

प्रभुर आवेशे अवश सर्व-भक्त-गण ।
प्रेमावेशे सबे नाचे, करेन कीर्तन ॥ ६० ॥

प्रभुर आवेशे—श्री चैतन्य महाप्रभु की अत्यधिक प्रेमभावना से; **अवश**—निःसहाय; **सर्व-भक्त-गण**—सभी भक्त; **प्रेम-आवेशे**—अत्यधिक प्रेम भावना में; **सबे**—सभी; **नाचे**—नृत्य करने लगे; **करेन कीर्तन**—संकीर्तन करने लगे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रेमावेश के कारण सारे भक्त निरुपाय थे और वे भी प्रेमावेश में नृत्य तथा सामूहिक कीर्तन करने लगे।

এই-মতে নৃত্য প্রভু কৈলা কত-ক্ষণ ।
স্বরূপ-গোসাঞি প্রভুরে করাইল সাবধান ॥ ৬১ ॥

एइ-मते नृत्य प्रभु कैला कत-क्षण ।
स्वरूप-गोसाञि प्रभुरे कराइल सावधान ॥ ६१ ॥

एइ-मते—इस प्रकार; **नृत्य**—नृत्य करे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कैला**—किया; **कत-क्षण**—कुछ समय तक; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **कराइल**—बताया; **सावधान**—क्रियाविधि।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु कुछ समय तक इसी तरह नृत्य करते रहे और तब

स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने ठाकुर हरिदास के शरीर के लिए अन्य क्रियाओं के विषय में उन्हें सूचित किया।

হরিদাস-ঠাকুরে তবে বিমানে চড়াঞা ।
সমুদ্রে লঞা গেলা তবে কীর্তন করিয়া ॥ ৬২ ॥

হরিদাস-ঠাকুরে তবে বিমানে চড়াঞা ।
সমুদ্রে লঞা গেলা তবে কীর্তন করিয়া ॥ ৬২ ॥

हरिदास-ठाकुरे—हरिदास ठाकुर; **तबे**—तब; **विमाने**—विमान पर; **चड़ाञा**—उठाया; **समुद्रे**—समुद्र तट पर; **लञा गेला**—ले गये; **तबे**—तब; **कीर्तन करिया**—संकीर्तन किया।

अनुवाद

तब हरिदास ठाकुर के शरीर को एक वाहन पर चढ़ाया गया, जो विमान जैसा था और सामूहिक कीर्तन के साथ उसे समुद्र ले जाया गया।

আগে মহাপ্রভু চলেন নৃত্য করিতে করিতে ।
পাছে নৃত্য করে বক্রেশ্বর ভক্ত-গণ-সাথে ॥ ৬৩ ॥

আগে মহাপ্রভু চলেন নৃত্য করিতে করিতে ।
পাছে নৃত্য করে বক্রেশ্বর ভক্ত-গণ-সাথে ॥ ৬৩ ॥

आगे—आगे; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चलेन**—जा रहे थे; **नृत्य**—नृत्य; **करिते करिते**—करते हुए; **पाछे**—पीछे; **नृत्य करे**—नृत्य करते थे; **वक्रेश्वर**—वक्रेश्वर; **भक्त-गण-साथे**—अन्य भक्तों के साथ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु शोभायात्रा के आगे आगे नृत्य कर रहे थे और वक्रेश्वर पण्डित अन्य भक्तों के साथ उनके पीछे-पीछे कीर्तन करते हुए नृत्य कर रहे थे।

হরিদাসে সমুদ্র-জলে স্নান করাইলা ।
প্রভু কহে,—"সমুদ্র এই 'মহা-তীর্থ' হ-ইলা" ॥ ৬৪ ॥

হরিদাসে সমুদ্র-জলে স্নান করাইলা ।
প্রভু কহে,—"সমুদ্র এই 'মহা-তীর্থ' হ-ইলা" ॥ ৬৪ ॥

हरिदासे—हरिदास का देह; **समुद्र-जले**—समुद्र के पानी में; **स्नान कराइला**—स्नान कराया गया; **प्रभु कहे**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **समुद्र**—समुद्र; **एइ**—यह; **महा-तीर्थ ह-इला**—बड़ा तीर्थ स्थल बन गया है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने हरिदास ठाकुर के शरीर को समुद्र में स्नान कराया और घोषित किया, "आज से यह समुद्र महान् तीर्थस्थल बन गया है।"

হরিদাসের পাদোদক পিয়ে ভক্ত-গণ ।
হরিদাসের অঙ্গে দিলা প্রসাদ-চন্দন ॥ ৬৫ ॥

हरिदासेर पादोदक पिये भक्त-गण ।
हरिदासेर अङ्गे दिला प्रसाद-चन्दन ॥ ६५ ॥

हरिदासेर—हरिदास ठाकुर के; **पाद-उदक**—चरणकमलों को छुआ हुआ जल; **पिये**—पिया; **भक्त-गण**—भक्तों ने; **हरिदासेर**—हरिदास ठाकुर के; **अङ्गे**—अंग पर; **दिला**—लीपा; **प्रसाद-चन्दन**—जगन्नाथ भगवान् को अर्पण किये चन्दन का प्रसाद।

अनुवाद

हर एक ने उस जल को पिया, जो हरिदास ठाकुर के चरणों का स्पर्श कर चुका था और सबों ने जगन्नाथ जी के चन्दन प्रसाद का हरिदास ठाकुर के शरीर पर लेप किया।

ডোর, কড়ার, প্রসাদ, বস্ত্র অঙ্গে দিলা ।
বালুকার গর্ত করি' তাহে শোয়াইলা ॥ ৬৬ ॥

डोर, कड़ार, प्रसाद, वस्त्र अङ्गे दिला ।
वालुकार गर्त करि' ताहे शोयाइला ॥ ६६ ॥

डोर—रेशमी रस्सीयाँ; **कड़ार**—जगन्नाथ भगवान् को अर्पण किए चन्दन का प्रसाद; **प्रसाद**—जगन्नाथजी का प्रसाद; **वस्त्र**—वस्त्र; **अङ्गे**—अंग पर; **दिला**—रखा; **वालुकार**—रेत में; **गर्त**—गड्ढा; **करि'**—बनाकर; **ताहे**—उसमें; **शोयाइला**—रखा।

अनुवाद

बालू में गड्ढा खोदकर उसमें हरिदास ठाकुर का शरीर रख दिया गया।

तब भगवान् जगन्नाथ का प्रसाद—यथा उनकी रेशमी रस्सियाँ, चन्दन लेप, भोजन तथा वस्त्र—उनके शरीर के ऊपर रखा गया।

चारि-दिके भक्त-गण करेन कीर्तन ।
वक्रेश्वर-पण्डित करेन आनन्दे नर्तन ॥ ६७ ॥

चारि-दिके भक्त-गण करेन कीर्तन ।
वक्रेश्वर-पण्डित करेन आनन्दे नर्तन ॥ ६७ ॥

चारि-दिके—चारों ओर; **भक्त-गण**—भक्त; **करेन**—किया; **कीर्तन**—संकीर्तन; **वक्रेश्वर-पण्डित**—वक्रेश्वर पण्डित; **करेन**—किया; **आनन्दे**—उल्लास में; **नर्तन**—नृत्य।

अनुवाद

भक्तों ने शरीर के चारों ओर सामूहिक कीर्तन किया और वक्रेश्वर पण्डित ने आनन्दित होकर नृत्य किया।

'हरि-बोल' 'हरि-बोल' बले गौररराय ।
आपनि श्री-हस्ते बालु दिला ताँर गाय ॥ ६८ ॥

'हरि-बोल' 'हरि-बोल' बले गौरराय ।
आपनि श्री-हस्ते बालु दिला ताँर गाय ॥ ६८ ॥

हरि-बोल हरि-बोल—हरिबोल हरिबोल; **बले**—बोले; **गौरराय**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आपनि**—स्वयं; **श्री-हस्ते**—उनके दिव्य हाथों से; **बालु दिला**—रेत डाली; **ताँर गाय**—उनके अंग पर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने दिव्य हाथों से हरिदास ठाकुर के शरीर को 'हरि बोल' 'हरि बोल' कीर्तन करते हुए बालू से ढक दिया।

ताँरे बालु दिया उपरे पिण्डा बाँधाइला ।
चौदिके पिण्डेर महा आवरण कैला ॥ ६९ ॥

ताँरे बालु दिया उपरे पिण्डा बाँधाइला ।
चौदिके पिण्डेर महा आवरण कैला ॥ ६९ ॥

ताँरे—हरिदास ठाकुर के देह पर; **बालु**—रेत; **दिया**—डाले; **उपरे**—ऊपर; **पिण्डा**

बाँधाइला—मंच बाँधा; **चौ-दिके**—चारों ओर; **पिण्डेर**—मंच की; **महा आवरण कैला**—एक सुरक्षित चारदीवारी बनाई।

अनुवाद

भक्तों ने हरिदास ठाकुर के शरीर को बालू से ढककर उसी स्थान पर एक चबूतरा बना दिया। इस चबूतरे को चारों ओर से चारदीवारी द्वारा सुरक्षित कर दिया गया।

তাহা বেড়ি' প্রভু কৈলা কীর্তন, নর্তন ।
হরি-ধ্বনি-কোলাহলে ভরিল ভুবন ॥৭০॥
তাহা বেড়ি' প্রভু কৈলা কীর্তন, নর্তন ।
হরি-ধ্বনি-কোলাহলে ভরিল ভুবন ॥৭০॥

তাহা—उसके; **বেড়ি'**—चारों ओर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **কৈলা**—किया; **কীর্তন নর্তন**—कीर्तन एवं नृत्य; **হরি-ধ্বনি-কোলাহলে**—हरिनाम के कोलाहल से; **ভরিল**—भरा; **ভুবন**—सम्पूर्ण विश्व।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने इस चबूतरे के चारों ओर नृत्य और कीर्तन किया और जब हरिनाम का कोलाहल हुआ, तो सारा ब्रह्माण्ड उस शब्द से भर गया।

তবে মহাপ্রভু সব ভক্ত-গণ-সঙ্গে ।
সমুদ্রে করিলা স্নান-জল-কেলি রঙ্গে ॥৭১॥
তবে মহাপ্রভু সব ভক্ত-গণ-সঙ্গে ।
সমুদ্রে করিলা স্নান-জল-কেলি রঙ্গে ॥৭১॥

তবে—तभी; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **সব**—सभी; **ভক্ত-গণ-সঙ্গে**—भक्तों के संग; **সমুদ্রে**—समुद्र में; **করিলা স্নান**—स्नान किया; **জল-কেলি**—जल में खेला; **রঙ্গে**—अत्यन्त उल्लास से।

अनुवाद

संकीर्तन के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने भक्तों के साथ समुद्र में तैरकर तथा हर्षित होकर जलक्रीड़ा करके स्नान किया।

হরিদাসে প্রদক্ষিণ করি' আইল সিংহ-দ্বারে ।
হরি-কীর্তন-কোলাহল সকল নগরে ॥৭২॥

हरिदासे प्रदक्षिण करि' आइल सिंह-द्वारे ।
हरि-कीर्तन-कोलाहल सकल नगरे ॥७२॥

हरिदासे—हरिदास; **प्रदक्षिण करि'**—प्रदक्षिणा करके; **आइल सिंह-द्वारे**—जगन्नाथ मन्दिर के सिंहद्वार पर आये; **हरि-कीर्तन-कोलाहल**—संकीर्तन का कोलाहल; **सकल नगरे**—सम्पूर्ण शहर में।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर की समाधि की प्रदक्षिणा करके श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ मन्दिर के सिंहद्वार पर गये। सारे नगर ने संकीर्तन में भाग लिया और कोलाहल से सारा नगर गुंजायमान हो उठा।

সিংহ-দ্বারে আসি' প্রভু পসারির ঠাঞি ।
আঁচল পাতিয়া প্রসাদ মাগিলা তথাই ॥৭৩॥

सिंह-द्वारे आसि' प्रभु पसारिर ठाञि ।
आँचल पातिया प्रसाद मागिला तथाइ ॥७३॥

सिंह-द्वारे आसि'—सिंहद्वार पर आकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पसारिर ठाञि**—सभी दुकानदारों से; **आँचल पातिया**—अपने वस्त्र फैलाकर; **प्रसाद**—जगन्नाथ-प्रसाद; **मागिला**—माँगा; **तथाइ**—वहाँ।

अनुवाद

सिंहद्वार पर पहुँचकर श्री चैतन्य महाप्रभु वहाँ के सारे दूकानदारों से वस्त्र फैलाकर प्रसाद माँगने लगे।

'হরিদাস-ঠাকুরের মহোৎসবের তরে ।
প্রসাদ মাগিয়ে ভিক্ষা দেহ' ত' আমারে' ॥৭৪॥

'हरिदास-ठाकुरेर महोत्सवेर तरे ।
प्रसाद मागिये भिक्षा देह' त' आमारे' ॥७४॥

हरिदास-ठाकुरेर—हरिदास ठाकुर के; **महोत्सवेर तरे**—महोत्सव मनाने के लिए; **प्रसाद मागिये**—मैं प्रसाद माँगता हूँ; **भिक्षा देह'**—कृपया भीक्षा दें; **त'**—अवश्य; **आमारे**—मुझे।

अनुवाद

महाप्रभु ने कहा, "मैं हरिदास ठाकुर के देहावसान के सम्मानार्थ उत्सव के लिए प्रसाद माँग रहा हूँ। कृपया मुझे भिक्षा दें।"

শুনিয়া পসারি সব চাঙ্গড়া উঠাঞা ।
প্রসাদ দিতে আসে তারা আনন্দিত হঞা ॥৭৫॥

शुनिया पसारि सब चाङ्गड़ा उठाञा ।
प्रसाद दिते आसे तारा आनन्दित हञा ॥७५॥

शुनिया—सुनकर; **पसारि**—दूकानदार; **सब**—सब; **चाङ्गड़ा उठाञा**—बड़ी-बड़ी टोकरियाँ उठाकर; **प्रसाद दिते**—प्रसाद देने के लिए; **आसे**—आये; **तारा**—वे; **आनन्दित हञा**—प्रसन्नतापूर्वक।

अनुवाद

यह सुनकर सारे दूकानदार तुरन्त ही बड़ी-बड़ी टोकरियों में प्रसाद भरकर ले आये और प्रसन्नतापूर्वक श्री चैतन्य महाप्रभु को दिया।

স্বরূপ-গোসাঞি পসারিকে নিষেধিল ।
চাঙ্গড়া লঞা পসারি পসারে বসিল ॥৭৬॥

स्वरूप-गोसाञि पसारिके निषेधिल ।
चाङ्गड़ा लञा पसारि पसारे वसिल ॥७६॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **पसारिके**—दूकानदार; **निषेधिल**—रोका; **चाङ्गड़ा लञा**—टोकरियाँ लेकर; **पसारि**—दूकानदार; **पसारे वसिल**—अपनी दूकानों में बैठ गये।

अनुवाद

किन्तु स्वरूप दामोदर ने दूकानदारों को रोका और वे अपनी दूकानों में लौटकर अपनी-अपनी टोकरी लेकर बैठ गये।

স্বরূপ-গোসাঞি প্রভুরে ঘর পাঠাইলা ।
চারি বৈষ্ণব, চারি পিছাড়া সঙ্গে রাখিলা ॥৭৭॥

स्वरूप-गोसाञि प्रभुरे घर पाठाइला ।
चारि वैष्णव, चारि पिछाड़ा सङ्गे राखिला ॥ ७७ ॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **घर पाठाइला**—उनके निवासस्थान पर भेज दिया; **चारि वैष्णव**—चार वैष्णव; **चारि पिछाड़ा**—चार बोझा ढोनेवाले नौकर; **सङ्गे राखिला**—उन्होंने साथ रख लिया।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने श्री चैतन्य महाप्रभु को उनके निवासस्थान पर भिजवा दिया और अपने साथ चार वैष्णव तथा चार बोझा ढोने वाले नौकरों को रख लिया।

স্বরূপ-গোসাঞি কহিলেন সব পসারিরে ।
এক এক দ্রব্যের এক এক পুঞা দেহ' মোরে ॥ ৭৮ ॥
स्वरूप-गोसाञि कहिलेन सब पसारिरे ।
एक एक द्रव्येर एक एक पुञा देह' मोरे ॥ ७८ ॥

स्वरूप-गोसाञि—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **कहिलेन**—कहा; **सब पसारिरे**—सभी दूकारनदारों से; **एक एक द्रव्येर**—हर एक प्रकार का प्रसाद; **एक एक पुञा**—चार अंजुली; **देह' मोरे**—मुझे दे दो।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने सारे दूकानदारों से कहा, "मुझे हर टोकरी में से चार चार अंजुली प्रसाद दे दो।"

এই-মতে নানা প্রসাদ বোঝা বান্ধাঞা ।
লঞা আইলা চারি জনের মস্তকে চড়াঞা ॥ ৭৯ ॥
एइ-मते नाना प्रसाद बोझा बान्धाञा ।
लञा आइला चारि जनेर मस्तके चड़ाञा ॥ ७९ ॥

एइ-मते—इस तरह; **नाना**—कई तरह; **प्रसाद**—प्रसाद; **बोझा**—बोझा; **बान्धाञा**—बाँधकर; **लञा आइला**—लाया; **चारि जनेर**—चार व्यक्तियों के; **मस्तके**—सिर पर; **चड़ाञा**—चढ़ाकर।

अनुवाद

इस तरह कई तरह के प्रसाद एकत्र कर लिये गये, उन्हें विभिन्न पोटलियों में बाँधा गया और चार नौकरों के सिरों पर रखाकर ले जाया गया।

বাণীনাথ পট্টনায়ক প্রসাদ আনিলা ।
কাশী-মিশ্র অনেক প্রসাদ পাঠাইলা ॥৮০॥

वाणीनाथ पट्टनायक प्रसाद आनिला ।
काशी-मिश्र अनेक प्रसाद पाठाइला ॥८०॥

वाणीनाथ पट्टनायक—वाणीनाथ पट्टनायक; **प्रसाद**—प्रसाद; **आनिला**—लाये; **काशी-मिश्र**—काशी मिश्र; **अनेक प्रसाद**—अनेक प्रकार का प्रसाद; **पाठाइला**—भेजा।

अनुवाद

इस तरह न केवल स्वरूप दामोदर गोस्वामी प्रसाद लाये, अपितु वाणीनाथ पट्टनायक तथा काशी मिश्र ने भी प्रचुर मात्रा में प्रसाद भेजा।

সব বৈষ্ণবে প্রভু বসাইলা সারি সারি ।
আপনে পরিবেশে প্রভু লঞা জনা চারি ॥৮১॥

सब वैष्णवे प्रभु वसाइला सारि सारि ।
आपने परिवेशे प्रभु लञा जना चारि ॥८१॥

सब वैष्णवे—सारे वैष्णव; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **वसाइला**—नीचे बैठाया; **सारि सारि**—पंक्तियों में; **आपने**—स्वयं; **परिवेशे**—वितरण किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा**—लेकर; **जना चारि**—चार व्यक्ति।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने सारे भक्तों को पंक्तियों में बैठाया और चार अन्य व्यक्तियों के साथ वे स्वयं उस प्रसाद का वितरण करने लगे।

মহাপ্রভুর শ্রী-হস্তে অন্ন না আইসে ।
এক-এক পাতে পঞ্চ-জনার ভক্ষ্য পরিবেশে ॥৮২॥

महाप्रभुर श्री-हस्ते अल्प ना आइसे ।
एक-एक पाते पञ्च-जनार भक्ष्य परिवेशे ॥ ८२ ॥

महाप्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **श्री-हस्ते**—दिव्य हाथों में; **अल्प**—अल्प मात्रा; **ना आइसे**—नहीं आती; **एक-एक पाते**—हर एक पत्तल में; **पञ्च-जनार**—पाँच व्यक्तियों के; **भक्ष्य**—खाने के लिए; **परिवेशे**—वे देते।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु का अल्प मात्रा में प्रसाद लेने का अभ्यास नहीं था। अतएव हर पत्तल में वे इतना रख देते थे, जो पाँच व्यक्तियों के लिए पर्याप्त होता।

स्वरूप कहे,—"प्रभु, वसि' करह दर्शन ।
आमि ईंहा-सबा लञा करि परिवेशन ॥ ८३ ॥

स्वरूप कहे,—"प्रभु, वसि' करह दर्शन ।
आमि ईंहा-सबा लञा करि परिवेशन ॥ ८३ ॥

स्वरूप कहे—स्वरूप दामोदर ने कहा; **प्रभु**—हे प्रभु; **वसि'**—बैठ जायें; **करह दर्शन**—देखें; **आमि**—मैं; **ईंहा-सबा लञा**—इन सब व्यक्तियों के साथ; **करि परिवेशन**—वितरित कर रहा हूँ।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने श्री चैतन्य महाप्रभु से अनुरोध किया, "कृपया बैठ जायें और देखें। मेरी सहायता करने वाले इन लोगों के द्वारा मैं यह प्रसाद वितरित किये देता हूँ।"

स्वरूप, जगदानन्द, काशीश्वर, शङ्कर ।
चारि-जन परिवेशन करे निरन्तर ॥ ८४ ॥

स्वरूप, जगदानन्द, काशीश्वर, शङ्कर ।
चारि-जन परिवेशन करे निरन्तर ॥ ८४ ॥

स्वरूप—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **काशीश्वर**—काशीश्वर; **शङ्कर**—शंकर; **चारि-जन**—चार व्यक्ति; **परिवेशन करे**—वितरण किया; **निरन्तर**—लगातार।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर, जगदानन्द, काशीश्वर तथा शंकर—इन चार व्यक्तियों ने लगातार प्रसाद का वितरण किया।

प्रभु ना खाइले केह ना करे भोजन ।
प्रभुरे से दिने काशी-मिश्रेर निमन्त्रण ॥ ८५॥

प्रभु ना खाइले केह ना करे भोजन ।
प्रभुरे से दिने काशी-मिश्रेर निमन्त्रण ॥ ८५॥

प्रभु ना खाइले—जब तक महाप्रभु नहीं खा लेते; **केह ना करे भोजन**—कोई भोजन नहीं करता; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **से दिने**—उस दिन; **काशी-मिश्रेर**—काशी मिश्र ने; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण।

अनुवाद

सारे बैठे हुए भक्त तब तक प्रसाद नहीं ग्रहण कर रहे थे, जब तक महाप्रभु प्रसाद नहीं पा लेते। किन्तु उस दिन काशी मिश्र ने महाप्रभु को निमन्त्रित कर रखा था।

आपने काशी-मिश्र आइला प्रसाद लञा ।
प्रभुरे भिक्षा कराइला आग्रह करिया ॥ ८६॥

आपने काशी-मिश्र आइला प्रसाद लञा ।
प्रभुरे भिक्षा कराइला आग्रह करिया ॥ ८६॥

आपने—स्वयं; **काशी-मिश्र**—काशी मिश्र; **आइला**—आये; **प्रसाद लञा**—प्रसाद लेकर; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **भिक्षा कराइला**—प्रसाद दिया; **आग्रह करिया**—मनोयोग से आग्रह किया।

अनुवाद

इसलिए काशी मिश्र स्वयं वहाँ गये और उन्होंने बड़े मनोयोग से श्री चैतन्य महाप्रभु को प्रसाद दिया तथा उन्हें खिलाया।

पुरी-भारतीर सङ्गे प्रभु भिक्षा कैला ।
सकल वैष्णव तबे भोजन करिला ॥ ८७॥

पुरी-भारतीर सङ्गे प्रभु भिक्षा कैला ।
सकल वैष्णव तबे भोजन करिला ॥ ८७॥

पुरी-भारतीर सङ्गे—परमानन्द पुरी और ब्रह्मानन्द भारती के साथ; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भिक्षा कैला**—प्रसाद ग्रहण किया; **सकल वैष्णव**—सभी वैष्णव; **तबे**—तब; **भोजन करिला**—भोजन करना शुरू किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु परमानन्द पुरी तथा ब्रह्मानन्द भारती के साथ बैठ गये और उन्होंने प्रसाद ग्रहण किया। जब वे खाने लगे, तो सारे वैष्णव भी खाने लगे।

আকণ্ঠ পূরাঞা সবায় করাইলা ভোজন ।
দেহ' দেহ' বলি' প্রভু বলেন বচন ॥ ৮৮॥

आकण्ठ पूराञा सबाय कराइला भोजन ।
देह' देह' बलि' प्रभु बलेन वचन ॥ ८८॥

आकण्ठ पूराञा—गले तक भरकर; **सबाय**—हर एक ने; **कराइला भोजन**—भोजन किया; **देह' देह'**—और दो, और दो; **बलि'**—कहकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **बलेन वचन**—कहे।

अनुवाद

हर एक ने जी भरकर भोजन किया, क्योंकि श्री चैतन्य महाप्रभु परोसने वालों से कहे जा रहे थे, "उन्हें और दो, और दो।"

ভোজন করিয়া সবে কৈলা আচমন ।
সবারে পরাইলা প্রভু মাল্য-চন্দন ॥ ৮৯॥

भोजन करिया सबे कैला आचमन ।
सबारे पराइला प्रभु माल्य-चन्दन ॥ ८९॥

भोजन करिया—भोजन करके; **सबे**—सभी भक्तों ने; **कैला**—किया; **आचमन**—हाथ और मुँह धोकर; **सबारे**—उन सभी ने; **पराइला**—पहनाया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **माल्य**—फूलों की माला; **चन्दन**—चन्दन लेप।

अनुवाद

जब सारे भक्तों ने प्रसाद ग्रहण करना बन्द कर दिया और अपने अपने हाथ तथा मुँह धो चुके, तो श्री चैतन्य महाप्रभु ने हर एक को फूल माला तथा चन्दन लेप से अलंकृत किया।

प्रेमाविष्ट हञा प्रभु करेन वर-दान ।
शुनि' भक्त-गणेर जुड़ाय मनस्काम ॥९०॥

प्रेमाविष्ट हञा प्रभु करेन वर-दान ।
शुनि' भक्त-गणेर जुड़ाय मनस्काम ॥ ९०॥

प्रेम-आविष्ट हञा—प्रेमावेश से अभिभूत होकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन वर-दान**—आशीर्वाद दिया; **शुनि'**—सुनकर; **भक्त-गणेर**—भक्तों के; **जुड़ाय**—परिपूर्ण हुई; **मनः-काम**—मन की इच्छा।

अनुवाद

प्रेमावेश से अभिभूत होकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने सारे भक्तों को आशीर्वाद दिया, जिसे सबों ने बड़े ही सन्तोष के साथ सुना।

"हरिदासेर विजयोत्सव यें कैल दर्शन ।
यें इहाँ नृत्य कैल, यें कैल कीर्तन ॥९१॥
यें ताँरे वालुका दिते करिल गमन ।
तार मध्ये महोत्सवे यें कैल भोजन ॥९२॥
अचिरे ह-इबे ता-सबार 'कृष्ण-प्राप्ति' ।
हरिदास-दरशने हय ऐछे 'शक्ति' ॥९३॥

"हरिदासेर विजयोत्सव यें कैल दर्शन ।
यें इहाँ नृत्य कैल, यें कैल कीर्तन ॥ ९१॥
यें ताँरे वालुका दिते करिल गमन ।
तार मध्ये महोत्सवे यें कैल भोजन ॥ ९२॥
अचिरे ह-इबे ता-सबार 'कृष्ण-प्राप्ति' ।
हरिदास-दरशने हय ऐछे 'शक्ति' ॥ ९३॥

हरिदासेर—हरिदास ठाकुर ने; **विजय-उत्सव**—विजय उत्सव; **यें**—जिस किसी ने;

कैल दर्शन—देखा है; **ग्रे**—जिस किसी ने; **इहाँ**—यहाँ; **नृत्य कैल**—नृत्य किया; **ग्रे**—जिस किसी ने; **कैल कीर्तन**—कीर्तन किया; **ग्रे**—जिस किसी ने; **ताँरे**—उनको; **वालुका दिते**—बालू अर्पण की; **करिल गमन**—आगे आये; **तार मध्ये**—इस सम्बन्ध में; **महोत्सवे**—महोत्सव में; **ग्रे**—जो कोई; **कैल भोजन**—प्रसाद लिया; **अचिरे**—अति शीघ्र; **ह-इबे**—होगा; **ता-सबार**—उन सबको; **कृष्ण-प्राप्ति**—कृष्ण की प्राप्ति; **हरिदास-दरशने**—हरिदास ठाकुर के दर्शन से; **हय**—है; **ऐछे**—ऐसी; **शक्ति**—शक्ति।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह आशीर्वाद दिया, "जिस किसी ने श्री हरिदास ठाकुर के विजय उत्सव को देखा है, जिस किसी ने यहाँ कीर्तन और नृत्य किया है, जिस किसी ने हरिदास ठाकुर के शरीर पर बालू डाली है तथा जिस किसी ने प्रसाद ग्रहण उत्सव में भाग लिया है, उसे शीघ्र ही कृष्ण की कृपा प्राप्त होगी। हरिदास ठाकुर के दर्शन में ऐसी अद्भुत शक्ति है।

কৃপা করি' কৃষ্ণ মোরে দিয়াছিলা সঙ্গ ।
স্বতন্ত্র কৃষ্ণের ইচ্ছা,—কৈলা সঙ্গ-ভঙ্গ ॥৯৪॥

কৃপা করি' কৃষ্ণ মোরে দিয়াছিলা সঙ্গ ।
স্বতন্ত্র কৃষ্ণের ইচ্ছা,—কৈলা সঙ্গ-ভঙ্গ ॥ ৯৪॥

কৃপা করি'—कृपा करके; **কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण; **মোরে**—मुझे; **দিয়াছিলা সঙ্গ**—संगति प्रदान की; **স্বতন্ত্র**—स्वतन्त्र; **কৃষ্ণের**—भगवान् कृष्ण ने; **ইচ্ছা**—इच्छा; **কৈলা সঙ্গ-ভঙ্গ**—वह संगति छुडा दी है।

अनुवाद

"कृष्ण ने मुझ पर कृपा करके हरिदास ठाकुर की संगति प्रदान की। स्वतन्त्र इच्छा के होने के कारण कृष्ण ने अब वह संगति छुड़ा दी है।

হরিদাসের ইচ্ছা যবে হ-ইল চলিতে ।
আমার শকতি তাঁরে নারিল রাখিতে ॥৯৫॥

হরিদাসের ইচ্ছা যবে হ-ইল চলিতে ।
আমার শকতি তাঁরে নারিল রাখিতে ॥ ৯৫॥

हरिदासेर—हरिदास ठाकुर ने; **इच्छा**—इच्छा; **ग्रबे**—कब; **ह-इल**—थे; **चलिते**—चले गये; **आमार शकति**—मेरी शक्ति; **तौरे**—उनको; **नारिल राखिते**—नहीं रख सकी।

अनुवाद

"जब हरिदास ठाकुर ने यह भौतिक जगत् छोड़ना चाहा, तो उन्हें रोक पाना मेरी शक्ति के बाहर था।

इच्छा-मात्रे कैला निज-प्राण निष्क्रामण ।
पूर्वे येन शुनियाछि भीष्मेर मरण ॥ ९६॥

इच्छा-मात्रे कैला निज-प्राण निष्क्रामण ।
पूर्वे ग्रेन शुनियाछि भीष्मेर मरण ॥ ९६॥

इच्छा-मात्रे—अपनी इच्छा से; **कैला**—किया; **निज-प्राण**—अपना प्राण छोड़कर; **निष्क्रामण**—चले गये; **पूर्वे**—पूर्वकाल में; **ग्रेन**—यह; **शुनियाछि**—हमने सुना है; **भीष्मेर मरण**—भीष्मदेव के देह-त्याग का।

अनुवाद

"हरिदास ठाकुर केवल अपनी इच्छा से अपना प्राण छोड़कर उसी तरह चले गये, जिस तरह पूर्वकाल में भीष्म ने अपनी इच्छा से देह त्याग किया था, जैसाकि हमने शास्त्र में सुना है।

हरिदास आछिल पृथिवीर 'शिरोमणि' ।
ताहा विना रत्न-शून्या ह-इल मेदिनी ॥ ९७॥

हरिदास आछिल पृथिवीर 'शिरोमणि' ।
ताहा विना रत्न-शून्या ह-इल मेदिनी ॥ ९७॥

हरिदास—हरिदास ठाकुर; **आछिल**—थे; **पृथिवीर**—इस पृथ्वी के; **शिरोमणि**—मुकुटमणि; **ताहा विना**—उनके बिना; **रत्न-शून्या**—मूल्यवान रत्न के बिना; **ह-इल**—हो गया; **मेदिनी**—यह जगत्।

अनुवाद

"हरिदास ठाकुर इस पृथ्वी के मुकुटमणि थे। उनके बिना अब यह जगत् उस मूल्यवान रत्न से शून्य हो गया है।"

'জয় জয় হরিদাস' বলি' কর হরি-ধ্বনি" ।
এত বলি' মহাপ্রভু নাচেন আপনি ॥৯৮॥

'जय जय हरिदास' बलि' कर हरि-ध्वनि" ।
एत बलि' महाप्रभु नाचेन आपनि ॥ ९८ ॥

जय जय—जय जय; **हरिदास**—हरिदास ठाकुर की; **बलि'**—बोले; **कर हरि-ध्वनि**—हरिनाम का कीर्तन करो; **एत बलि'**—यह कहकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नाचेन**—नृत्य करने लगे; **आपनि**—स्वयं।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने सबों से कहा, "'हरिदास ठाकुर की जय' बोलो और पवित्र हरिनाम का कीर्तन करो।" यह कहकर वे स्वयं नृत्य करने लगे।

সবে গায়,——"জয় জয় জয় হরিদাস ।
নামের মহিমা যেঁহ করিলা প্রকাশ" ॥৯৯॥

सबे गाय,——"जय जय जय हरिदास ।
नामेर महिमा ग्रेंह करिला प्रकाश" ॥ ९९ ॥

सबे गाय—हर व्यक्ति कीर्तन करने लगा; **जय जय जय**—जय जय जय; **हरिदास**—हरिदास ठाकुर की; **नामेर महिमा**—पवित्र भगवन्नाम के कीर्तन की महिमा; **ग्रेंह**—उन्होंने; **करिला प्रकाश**—प्रकाशित किया।

अनुवाद

हर व्यक्ति कीर्तन करने लगा, "हरिदास ठाकुर की जय हो, जिन्होंने भगवान् के पवित्र नाम के कीर्तन की महिमा को प्रकाशित किया है!"

তবে মহাপ্রভু সব ভক্তে বিদায় দিলা ।
হর্ষ-বিষাদে প্রভু বিশ্রাম করিলা ॥১০০॥

तबे महाप्रभु सब भक्ते विदाय दिला ।
हर्ष-विषादे प्रभु विश्राम करिला ॥ १०० ॥

तबे—तत्पश्चात्; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सब भक्ते**—सारे भक्तों को; **विदाय**

दिला—विदा किया; **हर्ष-विषादे**—सुख और दुःख से मिश्रित; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **विश्राम करिला**—विश्राम किया।

अनुवाद

तत्पश्चात् श्री चैतन्य महाप्रभु ने सारे भक्तों को विदा किया और स्वयं भी सुख तथा दुःख की मिश्रित भावनाओं में डूबे विश्राम करने लगे।

एइ त' कहिलुँ हरिदासेर विजय ।
याहार श्रवणे कृष्णे दृढ़-भक्ति हय ॥ १०१॥

एइ त' कहिलुँ हरिदासेर विजय ।
ग्राहार श्रवणे कृष्णे दृढ़-भक्ति हय ॥ १०१ ॥

एइ त'—इस तरह; **कहिलुँ**—मैंने कहा है; **हरिदासेर**—हरिदास ठाकुर के; **विजय**—विजय; **ग्राहार श्रवणे**—इस कथा को सुनकर; **कृष्णे**—भगवान् कृष्ण की; **दृढ़-भक्ति**—दृढ़ भक्ति; **हय**—होगी।

अनुवाद

इस तरह मैंने हरिदास ठाकुर के गौरवमय महाप्रयाण का वर्णन किया है। जो भी इस कथा को सुनता है, वह निश्चय ही कृष्ण की भक्ति में अपने मन को दृढ़ करेगा।

तात्पर्य

पुरुषोत्तम क्षेत्र या जगन्नाथपुरी में एक तोटागोपीनाथ का मन्दिर है। वहाँ से समुद्र की ओर जाने पर हरिदास की समाधि को देखा जा सकता है, जो अभी तक वहाँ पर विद्यमान है। वहाँ पर अनन्त चतुर्दशी के दिन प्रतिवर्ष हरिदास ठाकुर के महाप्रयाण की स्मृति में एक उत्सव मनाया जाता है। उसी स्थान पर लगभग १०० वर्ष पूर्व नित्यानन्द प्रभु, कृष्णचैतन्य महाप्रभु तथा अद्वैत प्रभु के अर्चाविग्रह स्थापित किये गये थे। उड़ीसा प्रान्त के केन्द्रापाड़ा के एक निवासी भ्रमरवर ने इस मन्दिर में इन अर्चाविग्रहों की स्थापना के लिए धन दिया था। इस मन्दिर का प्रबन्ध तोटागोपीनाथ गोस्वामियों के हाथ में था।

बाद में यह मन्दिर किसी अन्यों के हाथ बेच दिया गया और अब वे ही मन्दिर की सेवा पूजा चला रहे हैं। इस मन्दिर तथा हरिदास की समाधि के पास ही श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने एक छोटी सी कुटिया, भक्तिकुटी बनवा दी है।

बँगला संवत् १३२९ (१९२२ ई.) को यहाँ पर गौड़ीय मठ की एक शाखा—पुरुषोत्तम मठ—की स्थापना की गई थी। *भक्ति रत्नाकर* में कहा गया है कि :

श्रीनिवास शीघ्र समुद्रेर कुले गेला।
हरिदास-ठाकुरेर समाधि देखिला॥
भूमिते पड़िया कैला प्रणति विस्तर।
भागवत-गण श्री-समाधि-सन्निधाने॥
श्रीनिवासे स्थिर कैला सस्नेह वचने॥
पुनः श्रीनिवास श्रीसमाधि प्रणमिया।
ये विलाप कैला, ता शुनिले द्रवे हिया॥

"श्रीनिवास ठाकुर तेजी से दौड़कर समुद्र तट पर गये। जब उन्होंने हरिदास ठाकुर की समाधि देखी, तो वे प्रार्थना करते हुए गिर पड़े और अचेतन जैसे हो गये। तब उपस्थित भक्तों ने अत्यन्त मधुर तथा स्नेहिल शब्द कहकर उन्हें सान्त्वना दी और श्रीनिवास ने पुनः समाधि को नमस्कार किया। हरिदास ठाकुर की समाधि पर अपने शोक में श्रीनिवास ने जो विरह व्यक्त किया है, उसे सुनकर हृदय द्रवित हो उठता है।"

চৈতন্যের ভক্ত-বাঞ্ছল্য ইহাতেই জানি ।
ভক্ত-বাঞ্ছা পূর্ণ কৈলা ন্যাসি-শিরোমণি ॥১০২॥

চৈতন্যের ভক্ত-বাৎসল্য ইহাতেই জানি ।
ভক্ত-বাঞ্ছা পূর্ণ কৈলা ন্যাসি-শিরোমণি ॥১০২॥

चैतन्येर—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **भक्त-वात्सल्य**—अपने भक्तों के प्रति स्नेह; **इहातेइ**—इससे; **जानि**—कोई समझ सकता है; **भक्त-वाञ्छा**—भक्तों की इच्छा; **पूर्ण कैला**—पूरी की; **न्यासि-शिरोमणि**—श्री चैतन्य महाप्रभु, संन्यासियों के मुकुटमणि।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर के महाप्रयाण की घटना से तथा श्री चैतन्य महाप्रभु ने जिस यत्न के साथ उसको मनाया, उससे यह समझा जा सकता है कि महाप्रभु अपने भक्तों के प्रति कितने वत्सल हैं। यद्यपि वे संन्यासियों में सर्वोच्च हैं, किन्तु उन्होंने हरिदास ठाकुर की इच्छा पूर्ण की।

শেষ-কালে দিলা তাঁরে দর্শন-স্পর্শন ।
তাঁরে কোলে করি' কৈলা আপনে নর্তন ॥ ১০৩॥

শেষ-কালে দিলা তাঁরে দর্শন-স্পর্শন ।
তাঁরে কোলে করি' কৈলা আপনে নর্তন ॥ ১০৩॥

शेष-काले—उनकी की अन्तिम अवस्था में; **दिला**—दिया; **ताँरे**—हरिदास ठाकुर को; **दर्शन-स्पर्शन**—संग रहना और स्पर्श करना; **ताँरे**—उन्हें; **कोले करि'**—अपनी गोद में लेकर; **कैला**—किया; **आपने**—स्वयं; **नर्तन**—नृत्य।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर की अन्तिम अवस्था में श्री चैतन्य महाप्रभु अपना संग देते रहे और उन्हें अपना स्पर्श करने की अनुमति देते रहे। तत्पश्चात् हरिदास ठाकुर के शरीर को अपनी गोद में लेकर महाप्रभु ने नर्तन किया।

আপনে শ্রী-হস্তে কৃপায় তাঁরে বালু দিলা ।
আপনে প্রসাদ মাগি' মহোৎসব কৈলা ॥ ১০৪॥

আপনে শ্রী-হস্তে কৃপায় তাঁরে বালু দিলা ।
আপনে প্রসাদ মাগি' মহোৎসব কৈলা ॥ ১০৪॥

आपने—स्वयं; **श्री-हस्ते**—अपने दिव्य हाथों से; **कृपाय**—अहैतुकी कृपा से; **ताँरे**—उनको; **वालु दिला**—बालू से ढका; **आपने**—स्वयं; **प्रसाद मागि'**—प्रसाद माँगकर; **महोत्सव कैला**—महोत्सव मनाया।

अनुवाद

अपनी अहैतुकी कृपा से महाप्रभु ने हरिदास ठाकुर के शरीर को बालू से स्वयं ढका और दूकानदारों से स्वयं भिक्षा माँगी। तत्पश्चात् उन्होंने हरिदास ठाकुर के महाप्रयाण का महोत्सव मनाया।

মহা-ভাগবত হরিদাস—পরম-বিদ্বান্ ।
এ সৌভাগ্য লাগি' আগে করিলা প্রয়াণ ॥ ১০৫॥

মহা-ভাগবত হরিদাস—পরম-বিদ্বান্ ।
এ সৌভাগ্য লাগি' আগে করিলা প্রয়াণ ॥ ১০৫॥

महा-भागवत—महान् भक्त; **हरिदास**—हरिदास ठाकुर; **परम-विद्वान्**—महान पण्डित; **ए सौभाग्य लागि'**—उनके महान् भाग्य के कारण; **आगे**—सामने; **करिला प्रयाण**—प्रयाण किया।

अनुवाद

हरिदास ठाकुर न केवल सर्वोच्च भगवद्भक्त थे, अपितु वे एक महान् परम विद्वान भी थे। यह तो उनका परम सौभाग्य था कि उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु के सामने प्रयाण किया।

तात्पर्य

यहाँ पर हरिदास ठाकुर को *परम-विद्वान्* कहा गया है। वस्तुत: भवबन्धन से छूटने के विज्ञान को जानना वही सबसे महत्त्वपूर्ण विज्ञान है। जो कोई भी इस विज्ञान को जानता है, उसे सबसे बड़ा विद्वान मानना चाहिए। जो कोई इस भौतिक जगत् की नश्वरता से परिचित है और आध्यात्मिक जगत् में स्थायी पद पाने में पटु है, जो यह जानता है कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हमारे व्यावहारिक ज्ञान से परे हैं, वही सबसे बड़ा विद्वान माना जाता है। हरिदास ठाकुर इस विज्ञान से भलीभाँति अवगत थे। इसलिए उन्हें इस सम्बन्ध में *परम-विद्वान्* कहा गया है। उन्होंने स्वयं हरे कृष्ण महामन्त्र के कीर्तन की महत्ता का प्रचार किया, जो शास्त्रों द्वारा अनुमोदित है। *श्रीमद्भागवत* (७.५.२४) में कहा गया है :

इति पुंसार्पिता विष्णौ भक्तिश्चेन्नवलक्षणा।
क्रियेत भगवत्यद्धा तन्मन्येऽधीतमुत्तमम्॥

कृष्ण-भक्ति की नौ विधियाँ हैं, जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है *श्रवणं कीर्तनम्*—अर्थात् सुनना तथा कीर्तन करना। हरिदास ठाकुर इस विज्ञान को भलीभाँति जानते थे, इसलिए उन्हें शास्त्रीय दृष्टि से *सर्वशास्त्राधीती* कहा जा सकता है। जिसने सारे वैदिक शास्त्रों के सार को जान लिया हो, वह शास्त्रज्ञान में उच्चकोटि का शिक्षित व्यक्ति माना जाता है।

চৈতন্য-চরিত্র এই অমৃতের সিন্ধু ।
কর্ণ-মন তৃপ্ত করে যার এক বিন্দু ॥১০৬॥

चैतन्य-चरित्र एइ अमृतेर सिन्धु ।
कर्ण-मन तृप्त करे ग्यार एक बिन्दु ॥ १०६ ॥

चैतन्य-चरित्र—श्री चैतन्य महाप्रभु का जीवन तथा चरित्र; **एइ**—यह; **अमृतेर सिन्धु**—अमृत के सागर; **कर्ण**—कान; **मन**—मन; **तृप्त करे**—तृप्त करते; **ग्यार**—जिसके; **एक**—एक; **बिन्दु**—बिन्दु।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु का जीवन तथा उनके गुण अमृत के समुद्र के तुल्य हैं, जिसकी एक बूँद मन तथा कर्णों को तृप्त कर सकती है।

ভব-সিন্ধু তরিবারে আছে যার চিত্ত ।
শ্রদ্ধা করি' শুন সেই চৈতন্য-চরিত্র ॥ ১০৭ ॥

भव-सिन्धु तरिबारे आछे ग्यार चित्त ।
श्रद्धा करि' शुन सेइ चैतन्य-चरित्र ॥ १०७ ॥

भव-सिन्धु—भवसागर; **तरिबारे**—पार करने की; **आछे**—है; **ग्यार**—जिसको; **चित्त**—इच्छा; **श्रद्धा करि'**—श्रद्धा तथा प्रेमपूर्वक; **शुन**—सुनना; **सेइ**—वह; **चैतन्य-चरित्र**—श्री चैतन्य महाप्रभु का जीवन तथा चरित्र।

अनुवाद

अतः भवसागर को पार करने के इच्छुक व्यक्ति को श्रद्धापूर्वक श्री चैतन्य महाप्रभु के जीवन तथा गुणों के विषय में श्रवण करना चाहिए।

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ১০৮ ॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे ग्यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १०८ ॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—के चरणकमलों में; **ग्यार**—जिसकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन करते हैं; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा

सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए उनके चरणचिह्नों पर चलकर मैं कृष्णदास श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत अन्त्यलीला के अन्तर्गत हरिदास ठाकुर का महाप्रयाण शीर्षक ग्यारहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।